UNIVERSAL LIBRARY
OU_182089
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81.092 P18P Accession No. H2588

Author पंडित, प्रकाश (सं.)

Title फैज और शायरी 1958

This book should be returned on or before the date last marked below.

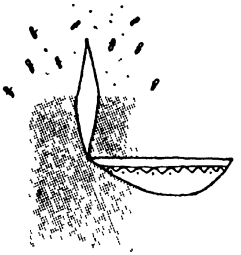

फ़ैज़

और उनकी शायरी

राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली

आत्माराम एन्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

संपादक
प्रकाश पंडित

प्रथम संस्करण
फ़र्वरी, १९५८

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

जीवनी	...	५—२०
चयन	...	२१—९५

नज़्में—

१. मुझसे पहली सी मोहब्बत...	...	२१
२. ख़ुदा वो वक़्त न लाए...	...	२३
३. मेरी जां अब भी अपना हुस्न...	...	२५
४. सोच	...	२७
५. रक़ीब से	...	२८
६. कुत्ते	...	३०
७. तनहाई	...	३१
८. चन्द रोज़ और मेरी जान !	...	३२
९. बोल...	...	३४
१०. आख़री ख़त	...	३५
११. ऐ दिले-बेताब ठहर !	...	३६
१२. मौज़ूए-सुख़न	...	३७
१३. आज की रात	...	३९
१४. शाहराह	...	४०
१५. मेरे हमदम मेरे दोस्त	...	४१

१६. लौहो-क़लम	...	४३
१७. ...तुम्हारे हुस्न के नाम	...	४४
१८. दो इश्क़	...	४५
१९. निसार मैं तेरी गलियों पे...	...	४८
२०. याद	...	५०
२१. दर्द आएगा दबे पाँव...	...	५१
२२. कोई आशिक़ किसी महबूबा से	...	५३
२३. शीशों का मसीहा कोई नहीं !	...	५४
२४. अंजाम	...	५८
२५. हसीना-ए-ख़याल से	...	५९
२६. इन्तज़ार	...	६०
२७. हुस्न और मौत	...	६१
२८. मेरे नदीम...	...	६२
२९. मर्ग़े-सोज़े-मोहब्बत	...	६३
३०. तराना	...	६४
३१. ग़ज़लें	...	६५
३२. कुछ चुने हुए शेर	...	८९

मताअ्-ए-लौहो-क़लम छिन गई तो क्या ग़म है ?
कि ख़ूने-दिल में डबो ली हैं उंगलियां मैंने ॥

जीवनी

पाकिस्तान टाइम्ज़, लाहौर

११-१०-५७

बरादरम प्रकाश पण्डित,

तस्लीम !

आपके दो ख़त मिले । भई, मुझे अपने हालाते-ज़िन्दगी में क़तई दिलचस्पी नहीं है, न मैं चाहता हूं कि आप उन पर अपने पढ़ने वालों का वक़्त ज़ाया करें । इन्तिख़ाब (कविताओं के चयन) और उसकी इशाअ़त (प्रकाशन) की आपको इजाज़त है । अपने बारे में मुख़्तसर मालूमात लिखे देता हूँ । पैदाइश सियालकोट १९११ । तालीम स्काच मिशन हाई स्कूल सियालकोट, गवर्नमेंट कालेज लाहौर (एम० ए० अंग्रेज़ी १९३३, एम० ए० अरबी १९३४)। मुलाज़मत एम० ए० ओ० कालेज अमृतसर १९३४ से १९४० तक । हेली कालेज लाहौर १९४० से १९४२ तक । फ़ौज में (कर्नल की हैसियत से) १९४२ से १९४७ तक । इसके बाद 'पाकिस्तान टाइम्ज़' और 'इमरोज़' की एडीटरी ताहाल (अब तक) । मार्च १९५१ से अप्रैल १९५५ तक जेलख़ाना (रावलपिंडी कान्सपिरेसी केस के

सिलसिले में)। किताबें 'नक़्शे-फ़र्यादी,' 'दस्ते-सबा' और 'जिन्दां-नामा'।

आपका
'फ़ैज़'

◇ ◇ ◇

'फ़ैज़' के इस पत्र के बाद फ़ैज़ के व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ लिखना, लिखना न होकर गढ़ना होगा—जिसे ज़ाहिर है न मैं पसंद करता हूं, न 'फ़ैज़,' और न ही आप पसंद करेंगे। अतएव 'फ़ैज़' के जीवन की बजाय मैं सीधे 'फ़ैज़' की शायरी की ओर आता हूं जिसके पीछे वर्षों बल्कि सदियों की साहित्यिक पूंजी है, बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि स्वयं साहित्य और समाज दोनों मिलकर वर्षों तपस्या करते हैं, तब जाकर ऐसी मन्त्र-मुग्ध कर देने वाली शायरी जन्म लेती है।

"शेर लिखना जुर्म न सही लेकिन बेवजह शेर लिखते रहना ऐसी अक़्लमन्दी भी नहीं है।" 'फ़ैज़' के पहले कविता-संग्रह 'नक़्शे-फ़र्यादी' की भूमिका में इस वाक्य को पढ़ते हुए मुझे 'ग़ालिब' का वह वाक्य याद आ गया जिसमें उर्दू के सब से बड़े शायर ने कहा था कि जब से मेरे सीने (छाती) का नासूर बंद हो गया है, मैंने शेर कहना छोड़ दिया है।

सीने का नासूर चाहे इश्क़ या प्रेम की भावना हो, चाहे स्वतंत्रता, देश एवं मानव-प्रेम की भावना, कविता ही के लिए नहीं समस्त ललित कलाओं के लिये अनिवार्य है। अध्ययन और अभ्यास से हमें बात कहने का सलीक़ा तो आ सकता है लेकिन

अपनी बात को वज़नी बनाने और दूसरे के मन में बिठाने के लिए स्वयं हमें अपने मन में उतरना पड़ता है। विश्व-साहित्य में ऐसी बहुत-सी मिसालें मिलती हैं कि किसी कवि अथवा लेखक ने बहुत अच्छी कवितायें, एक बहुत अच्छा उपन्यास या दस-पन्द्रह बहुत अच्छी कहानियां लिखने के बाद लिखने से हाथ खींच लिया और फिर समालोचकों या पाठकों के तक़ाज़ों से जब उसने पुनः क़लम उठाया तो वह बात पैदा न हो सकी जो उसके 'कच्चेपन' के ज़माने में हुई थी। कदाचित इसी बात को लेकर 'नक़्शे-फ़र्यादी' की भूमिका में 'फ़ैज़' ने अपनी दो-चार नज़्मों को क़ाबिले-बर्दाश्त क़रार देते हुए लिखा था कि "आज से कुछ बरस पहले एक मुऐयन जज़्बे (निश्चित भावना) के ज़ेर-असर अशआ़र (शेर) ख़ुद-बख़ुद वारिद (आगत) होते थे, लेकिन अब मज़ामीन (विषय) के लिए तजस्सुस (तलाश) करना पड़ता है·····हम में से बेशतर की शायरी किसी दाख़ली या ख़ारिजी मुहर्रक (अंतरग या बाह्य प्रेरक) की दस्ते-निगर (आभारी) होती है और अगर उन मुहर्रिकात की शिद्दत (उग्रता) में कमी आ जाये या उनके इज़हार (अभिव्यक्ति) के लिये कोई सहल रास्ता पेशे-नज़र न हो तो या तो तजुर्बात को मस्ख़ (रूपांतरित) करना पड़ता है या तरीक़े-इज़हार को। ऐसी सूरते-हालात पैदा होने से पहले ही ज़ौक़ और मसलहत का तक़ाज़ा यही है कि शायर को जो कुछ कहना हो कह ले, अहले-महफ़िल का शुक्रिया अदा करे और इजाज़त चाहे।"

'फ़ैज़' के अंतरंग या वाह्य प्रेरकों में सब से बड़ा प्रेरक 'हुस्नो-इश्क़' है बल्कि उसने तो यहां तक कह दिया था कि :–

... ...

लेकिन उस शोख़ के आहिस्ता से खुलते हुए होंट
हाए उस जिस्म के कम्बख़्त दिलावेज़ ख़ुतूत[1]
आप ही कहिये कहीं ऐसे भी अफ़्सूं[2] होंगे
अपना मौज़ूए-सुख़न[3] इन के सिवा और नहीं
तबए-शायर का[4] वतन इन के सिवा और नहीं
(मौज़ूए-सुख़न)

किन्तु इस बंद के शुरू के 'लेकिन' से पहले उसने जिन चीज़ों को अपना मौज़ूए-सुख़न बनाना पसंद नहीं किया था और :

इन दमकते हुए शहरों की फ़रावां मख़लूक़[5] ,
क्यों फ़क़त मरने की हसरत में जिया करती है ?
ये हसीं खेत फटा पड़ता है जोबन जिन का,
किस लिए इन में फ़क़त भूख उगा करती है ?

ऐसे प्रश्न हल किये बिना छोड़ दिये थे, वही 'साधारण' प्रश्न बाद में उसकी अंतरंग और बाह्य प्रेरणाओं का साधन बने और यही वे प्रश्न थे जिन्होंने उसे अहले-महफ़िल का शुक्रिया अदा करके उठ आने से रोका और उर्दू साहित्य को एक बड़ा शायर प्रदान किया ।

फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' आधुनिक काल के उन चंद बड़े शायरों

---

१. हृदयाकर्षक रेखायें (बनावट) २. जादू ३. काव्य-विषय ४. शायर की प्रकृति ५. विशाल जनता

में से हैं जिन्होंने काव्य-कला में नये प्रयोग तो किये लेकिन उन की बुनियाद पुराने प्रयोगों पर रक्खी और इस आधार-भूत तथ्य को कभी नहीं भुलाया कि हर नई चीज़ पुरानी कोख से जन्म लेती है। यही कारण है कि उसकी शायरी का अध्ययन करते समय हमें किसी प्रकार की अजनबियत महसूस नहीं होती। पेचीदा और अस्पष्ट उपमाओं से वह हमें उलझन में नहीं डालता बल्कि अपने कोमल स्वर में वह हम से सरगोशियां करता है और उसकी सरगोशी इतनी अर्थपूर्ण होती है कि कुछ शब्द कान में पड़ते ही मनोभाव उभर आते हैं। ज़रा 'नक़्शे-फर्यादी' का पहला पन्ना उलटिये:—

रात यूँ दिल में तेरी खोई हुई याद आई,
जैसे वीराने में चुपके से बहार आजाये,
जैसे सहराओं में[1] हौले से चले बादे-नसीम[2],
जैसे बीमार को बेवजह क़रार आजाये।

प्रेयसी की याद कोई नया काव्य-विषय नहीं है लेकिन इन सुन्दर उपमाओं और अपनी विशेष वर्णन-शैली से उसने इसे बिल्कुल नया बल्कि अछूता बना दिया है। इस एक क़ित्आ हो की नहीं यह उसकी समूची शायरी की विशेषता है कि वह नयी भी है और पुरानी भी। वर्तमान की उपज है लेकिन अतीत की उत्तराधिकारी है। नये विषय पुरानी शैली में और पुराने विषय नये ढंग से प्रस्तुत करने का जो कौशल 'फ़ैज़' को प्राप्त है, आधुनिक काल के बहुत कम शायर उसकी गर्द

१. मरुस्थलों २. मृदु समीर

का पहुँचते हैं। ज़रा 'ग़ालिब' का यह शेर देखिये :

दिया है दिल अगर उसको बशर है क्या कहिये।
हुआ रक़ीब तो हो, नामाबर[1] है क्या कहिये॥

और अब इसी विषय को 'फ़ैज़' की नज़्म' 'रक़ीब से' के दो शेरों में देखिये :—

तूने देखी है वो पेशानी[2], वो रुख़्सार[3], वो होंट,
ज़िन्दगी जिनके तसव्वुर में[4] लुटा दी हमने।
हमने इस इश्क़ में क्या खोया है क्या पाया है,
जुज़ तेरे[5] और को समझाऊं तो समझा न सकूं।

महबूब, आशिक़, रक़ीब और इश्क़ के मुआमलों तक ही सीमित नहीं, फ़ैज़' ने हर जगह नई और पुरानी बातों और नई और पुरानी शैली का बड़ा सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। 'ग़ालिब' का एक और शेर है :

लिखते रहे जुनूं की[6] हिकायाते-ख़ूंचकां[7]।
हरचंद इसमें हाथ हमारे क़लम हुए[8]॥

और 'फ़ैज़' का शेर है :

हम परवरिशे - लौहो - क़लम[9] करते रहेंगे।
जो दिल पे गुज़रती है रक़म करते रहेंगे[10]॥

इन उदाहरणों से मेरा उद्देश्य 'फ़ैज़' और ग़ालिब की शायरी के समन्वित मूल्य दर्शाना नहीं है और मेरा अभिप्राय यह भी

---

१. पत्र-वाहक २. माथा ३. कपोल ४. कल्पना में ५. तेरे सिवाय ६. इश्क़ अथवा उन्माद की ७. रक्तिम कथा ८. कट गये ९. तलवार और क़लम का पालन १०. लिखते रहेंगे

नहीं है कि हमें अतीत की समस्त परम्पराओं को ज्यों का त्यों अपना लेना चाहिये। कुछ परम्पराएं, चाहे वे साहित्य की हों, संस्कृति की हों, या अन्य सामाजिक खंडों की, अपनी ऐतिहासिक कार्यपूर्ति के बाद अपनी मौत आप मर जाती हैं। उन्हें नये सिरे से जिलाने का मतलब गड़े मुर्दे उखाड़ना और ऐतिहासिक विकास से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना है। लेकिन इससे भी खतरनाक बात यह है कि नयेपन के उन्माद में पुरानी चीज़ों को केवल इसलिये घृणा के योग्य मान लिया जाये कि वे पुरानी हैं। धरती, आकाश, चांद, सितारे, सूरज, समुद्र और पहाड़ सब पुराने हैं लेकिन हमें ये चीज़ें पसंद हैं; और इसलिये पसंद हैं कि हम प्रतिक्षण इन्हें बदलते रहते हैं—यानी इनके सम्बन्ध में हमारा दृष्टिकोण बदलता रहता है। हम इनके बारे में नई बातें मालूम कर लेते हैं और इस तरह ये समस्त पुरानी चीज़ें सदैव नई बनी रहती हैं।

यह एक बड़ी विचित्र लेकिन प्रशंसनीय वास्तविकता है कि प्राचीन और नवीन शायरों की महफ़िल में खप कर भी 'फ़ैज़' की अपनी एक अलग हैसियत है। उसने काव्य-कला के नियमों में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं किया, और न कभी अपनी अद्वितीयता प्रकट करने के लिये 'मीरा जी' (उर्दू के एक प्रयोगवादी शायर) की तरह यह कहा है कि "अकसरियत (बहुजनों) की नज़में अलग हैं और मेरी नज़में अलग; और चूंकि दुनिया की हर बात हर शख़्स के लिये नहीं होती इसलिये मेरी नज़में भी सिर्फ़ उनके लिये हैं जो उन्हें समझने

के अहल हों।" (यह अद्वितीयता शायर की है, शायरी की नहीं) फिर भी उसके किसी शेर पर उसका नाम पढ़े बिना हम बता सकते हैं कि यह 'फ़ैज़' का शेर है। 'फ़ैज़' की शायरी की 'अद्वितीयता' आधारित है उसकी शैली के लोच और मंदगति पर, कोमल, मृदुल और सौ-सौ जादू जगाने वाले शब्दों के चयन पर, तरसी हुई नाकाम निगाहें और आवाज़ में सोई हुई शीरीनियाँ ऐसी अलंकृत परिभाषाओं और रूपकों पर, और इन समस्त विशेषताओं के साथ गूढ़ से गूढ़ बात कहने के सलीक़े पर। उर्दू के एक बुज़ुर्ग शायर 'असर' लखनवी ने शायद बिल्कुल ठीक लिखा है कि " 'फ़ैज़' की शायरी तरक़्क़ी के मदारिज (दर्जे) तै करके अब इस नुक्ता-ए-उरूज (शिखर बिन्दु) पर पहुँच गई है जिस तक शायद ही किसी दूसरे तरक़्क़ी-पसंद (प्रगतिशील) शायर की रसाई हुई हो। तख़य्युल (कल्पना) ने सनाअ़त (शिल्पकला) के जौहर दिखाये हैं और मासूम जज़्बात को हसीन पैकर (शरीर) बख़्शा है। ऐसा मालूम होता है कि परियों का एक ग़ौल (झुण्ड) एक तलिस्मी फ़िज़ा (जादूई वातावरण) में इस तरह मस्ते-परवाज़ (उड़ने में मस्त) है कि एक पर एक की छूत पड़ रही है और क़ौसे-क़ज़ह (इन्द्रधनुष) के अक्कास (प्रतिरूपक) बादलों से सबरंगी बारिश हो रही है…।"

अपनी शायरी की तरह अपने व्यक्तिगत जीवन में भी उसे किसी ने ऊंचा बोलते नहीं सुना। बातचीत के अतिरिक्त मुशायरों में भी वह इस तरह अपने शेर पढ़ता है जैसे उसके

होंटों से यदि एक ज़रा ऊँची आवाज़ निकल गई तो न जाने कितने मोती चकनाचूर हो जायेंगे। वह सेना में कर्नल रहा, जहाँ किसी नर्मदिल व्यक्ति की गुंजाइश नहीं होती। उसने कालेज की प्रोफ़ेसरी की, जहां कालेज के लड़के प्रोफ़ेसर तो प्रोफ़ेसर शैतान तक को अपना स्वभाव बदलने पर विवश कर दें। उसने रेडियो में नौकरी की, जहां अपने मातहतों को न डांटने की दलील अफ़सर की नालायक़ी समझी जाती है। उसने पत्रकारिता-जैसा जान-जोखम का पेशा भी अपनाया और फिर जब पाकिस्तान सरकार ने इस देवता-स्वरूप व्यक्ति पर हिंसात्मक विद्रोह का आरोप लगाकर जेल में डाल दिया तब भी मेजर मोहम्मद इसहाक़ (फ़ैज़ के जेल के साथी) के कथनानुसार "कहीं पास-पड़ोस में तू-तू मैं-मैं हो, दोस्तों में तल्ख़-कलामी हो, या यूं ही किसी ने त्योरी चढ़ा रखी हो,'फ़ैज़' की तबीयत ज़रूर ख़राब हो जाती थी और इसके साथ ही शायरी की कैफ़ियत (मूड) भी काफ़ूर हो जाती थी।" 'फ़ैज़' ने अपने निर्दोष होने का तथा उच्चाधिकारियों के षड्यंत्रों का ज़िक्र किया भी तो इस भाषा में :

फ़िक्रे - दिलदारिये - गुलज़ार[1] करूं या न करूं ?
ज़िक्रे - मुर्ग़ाने - गिरफ़्तार[2] करूं या न करूं ?
क़िस्सा - ए - साज़िशे-अग़ियार[3] कहूं या न कहूँ ?
शिकवा - ए - यारे-तरहदार[4] करूं या न करूं ?

---

१. वाटिका-रूपी देश की दिलदारी की चिन्ता २. क़ैदी पक्षियों की चर्चा ३. शत्रुओं के षड्यन्त्र की कहानी ४. रंगीले यार की शिकायत

जाने क्या वज़्अ़[1] है अब रस्मे-वफ़ा[2] की ऐ दिल !
वज़्अ़-ए-देरोना पे[3] इसरार[4] करूं या न करूं ?

'फ़ैज़' के स्वर की यह नर्मी और गंभीरता उसके प्राचीन साहित्य के विस्तृत अध्ययन और मौलिक रूप से रोमांटिक या स्वच्छन्दता-वादी शायर होने की देन है। लेकिन उसकी स्वच्छन्दता चूंकि भौतिक संसार की स्वच्छन्दता है (प्रारंभ की कुछ नज़्मों को छोड़कर) और शायर का कर्तव्य उसके मतानुसार यह है कि वह जीवन से अनुभव प्राप्त करे और उस पर अपनी छाप लगाकर उसे फिर से जीवन को लौटा दे, इसलिए उसने बहुत शीघ्र सुर्ख़ होंटों पर तबस्सुम की ज़िया[5], मरमरीं हाथों की लर्ज़िशों, मख़मली बांहों और दमकते हुए रुख़्सारों[6] के सुनहले पर्दों के उस पार वास्तविकता की झलक देख ली*। अारज़ूओं के मक़तल[7], भूख उगाने वाले खेत, ख़ाक में लिथड़े और ख़ून में नहाये हुए जिस्म, बाज़ारों में बिकता हुआ मज़दूर का गोश्त और नातवानों[8] के निवालों पर झपटते हुए उक़ाब[9] देख लिये और कहने को तो उसने अपनी प्रेयसी से कहा लेकिन वास्तव में वह अपनी स्वच्छन्दता-

---

१. तरीक़ा २. प्रेम निभाने की परिपाटी ३. पुराने ढंग पर ४. आग्रह ५. मुस्कान की ज्योति ६. कपोलों के ७. वध-स्थल ८. दुर्बलों ९. बाज़-पक्षी

* मेरे विचार में इसका एक कारण यह भी है कि प्रेम ने 'फ़ैज़' के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है और उसे अपने आप ही में नहीं उलझाए रखा—सम्पादक

वादी शायरी से सम्बोधित हुआ :

अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे,
और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा,
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा,
मुझसे पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न मांग !

और फिर स्वच्छन्दता से पूर्णतया मुक्त उसने राजनैतिक नज़्में भी लिखीं और देश-प्रेम को ठीक उसी वेदना और व्यथा के साथ व्यक्त किया जैसा कि प्रेयसी के प्रेम को किया था।

मुम्ताज़ हुसैन (उर्दू के एक आलोचक) के कथनानुसार उसकी शायरी में अगर एक परम्परा क़ैस (मजनूँ) की है तो दूसरी मन्सूर[1] की। 'फ़ैज़' ने इन दोनों परम्पराओं को अपनी शायरी में कुछ इस प्रकार समो लिया है कि उसकी शायरी स्वयं एक परम्परा बन गई है। वह जब भी महफ़िल में आया तो एक छोटी सी पुस्तक, एक क़ितआ, ग़ज़ल के कुछ शेर, कुछ यूंही सा काव्य-अभिभास और कुछ क्षमा-याचना की बातें लेकर आया, लेकिन जब भी और जैसे भी आया खूब आया। दोस्त दुश्मनों ने सिर हिलाया, चर्चा हुई। कुछ लोगों ने यह कहकर पुस्तक पटक दी—इसमें रखा ही क्या है; लेकिन

---

१. एक प्रसिद्ध ईरानी वली जिनका विश्वास था कि आत्मा और परमात्मा एक ही हैं और उन्होंने 'अनल-हक़' (सोऽहं—मैं ही परमात्मा हूँ) की आवाज़ उठाई थी। उस समय के मुसलमानों को उनका यह नारा अधार्मिक लगा और उन्होंने उन्हें फांसी दे दी।

फिर वही उस पुस्तक के शेरों को गुनगुनाने भी लगे[1] । कैसी आश्चर्यजनक वास्तविकता है कि केवल चंद नज़्मों और चंद ग़ज़लों का शायर होने पर भी 'फ़ैज़' की शायरी एक बाक़ायदा 'स्कूल आफ़ थॉट' का दर्जा रखती है और नई पीढ़ी का कोई उर्दू शायर अपनी छाती पर हाथ रखकर इस बात का दावा नहीं कर सकता कि वह किसी-न-किसी रूप में 'फ़ैज़' से प्रभावित नहीं हुआ । रूप और रस, प्रेम और राजनीति, कला और विचार का जैसा सराहनीय समन्वय फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' ने प्रस्तुत किया है और प्राचीन परम्पराओं पर नवीन परम्पराओं का महल उसारा है, निःसंदेह वह उसी का हिस्सा है और आधुनिक उर्दू शायरी उसके इस योग पर जितना गर्व कर सके कम है ।

---

१. १९५२ में जब 'फ़ैज़' जेल में था और उसकी दूसरी पुस्तक 'दस्ते-सबा' प्रकाशित हुई थी तो सय्यद सज्जाद ज़हीर (उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकार, कम्युनिस्ट नेता और 'फ़ैज़' के जेल के साथी) ने तो यहाँ तक कह दिया था कि 'बहुत अर्सा गुज़र जाने के बाद जब लोग रावलपिंडी साज़िश के मुक़द्दमे को भूल जायेंगे और पाकिस्तान का मुवर्रिख़ (इतिहासकार) १९५२ के अहम वाक़यात पर नज़र डालेगा तो ग़ालिबन इस साल का सबसे अहम तारीख़ी वाक़या (ऐतिहासिक घटना) नज़्मों की इस छोटी-सी किताब की इशाअ़त (प्रकाशन) को ही क़रार दिया जाएगा ।

चयन

यह चयन 'फ़ैज़' की तीन पुस्तकों 'नक्शे-फ़र्यादी',
'दस्ते-सबा' और 'ज़िन्दां-नामा'
में से किया गया है।

मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न मांग !

मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न मांग !
मैंने समझा था कि तू है तो दरख़्शां[1] है हयात[2] ,
तेरा ग़म है तो ग़मे-दहर का[3] झगड़ा क्या है ?
तेरी सूरत से है आलम में[4] बहारों को सबात[5] ,
तेरी आंखों के सिवा दुनिया में रक्खा क्या है ?

तू जो मिल जाये तो तक़दीर निगूं[6] हो जाये ,
यूं न था, मैंने फ़क़त[7] चाहा था यूं हो जाये ।

और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा,
राहतें[8] और भी हैं वस्ल की[9] राहत के सिवा,
अनगिनत सदियों के तारीक बहीमाना तलिस्म[10],
रेशमो-अतलसो-कमख़्वाब के बुनवाये हुए,
जा-ब-जा बिकते हुए कूचा-ओ-बाज़ार में जिस्म,
ख़ाक में लिथड़े हुए, ख़ून में नहलाये हुए ।

---

१. प्रकाशमान २. जीवन ३. सांसारिक चिंताओं का ४. संसार में ५. स्थायित्व ६. सिर झुका ले ७. केवल ८. आनन्द ९. मिलन की १०. अंधकारपूर्ण पाशविक जादू

जिस्म निकले हुए अमराज़ के[1] तन्नूरों से,
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरों से।
लौट जाती है उधर को भी नज़र क्या कीजे ?
अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे ?
और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा,
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा,
मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न मांग !

१. रोगों के

ख़ुदा वो वक़्त न लाये·····

ख़ुदा वो वक़्त न लाये कि सोगवार[1] हो तू !

सुकूं[2] की नींद तुझे भी हराम हो जाये,
तेरी मसरर्ते-पैहम[3] तमाम हो जाये,
तेरी हयात[4] तुझे तल्ख़-जाम[5] हो जाये,
ग़मों से आईना-ए-दिल[6] गुदाज़[7] हो तेरा !

हुजूमे-यास से[8] बेताब होके रह जाये,
बुफ़ूरे-दर्द से[9] सीमाब[10] होके रह जाये,
तेरा शबाब[11] फ़क़त[12] ख़्वाब होके रह जाये,
ग़रूरे-हुस्न[13] सरापा नियाज़[14] हो तेरा !

तवील[15] रातों में तू भी क़रार को[16] तरसे,
तेरी निगाह किसी ग़म-गुसार को[17] तरसे,
ख़िज़ां-रसीदा तमन्ना[18] बहार को तरसे,
कोई जबीं[19] न तेरे संगे-आस्तां पे[20] झुके !

---

१. उदास, मलिन-मन २. शान्ति की ३. स्थायी प्रसन्नता ४. जीवन ५. कड़वा प्याला ६. हृदय-रूपी दर्पण ७. पिघलने वाला ८. निराशाओं की बहुलता से ९. पीड़ाओं की बहुलता से १०. पारा ११. यौवन १२. केवल १३. सौन्दर्य का घमंड १४. सिर से पैर तक विनय की मूर्ति १५. लम्बी १६. चैन को १७. सहानुभूति करने वाले को १८. मुर्झाई हुई (विफल) कामना १९. माथा २० दहलीज़ के पत्थर पर

कि जिन्से-अज्ज़ो-अक़ीदत से[1] तुझको शाद[2] करे,
फ़रेबे-वादा-ए-फ़र्दा पे[3] एतमाद[4] करे,
ख़ुदा वो वक़्त न लाये कि तुझ को याद आये !

वो दिल कि तेरे लिये बेक़रार अब भी है।
वो आंख जिसको तेरा इन्तज़ार अब भी है॥

---

१. विनय और श्रद्धा से २. प्रसन्न ३. कल के वादे के फरेब पर ४. विश्वास

मेरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको !

मेरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको !

अभी तक दिल में तेरे इश्क़ की क़ंदील[१] रोशन[२] है,
तेरे जलवों से बज़्मे-ज़िन्दगी[३] जन्नत-ब-दामन[४] है।

मेरी रूह अब भी तनहाई में तुझको याद करती है,
हर इक तारे-नफ़स में[५] आरजू बेदार[६] है अब भी।
हर इक बेरंग साअ़त[७] मुन्तज़िर है तेरी आमद की[८],
निगाहें बिछ रही हैं रास्ता ज़रकार[९] है अब भी।

मगर जाने-हज़ीं[१०] सदमे सहेगी आख़रिश[११] कब तक ?
तेरी बेमेहरियों पे[१२] जान देगी आख़रिश कब तक ?

तेरी आवाज़ में सोई हुई शीरीनियां[१३] आख़िर,
मेरे दिल की फ़सुर्दा[१४] खलवतों में[१५] जा न पायेंगो।
ये अश्कों की फ़रावानी से[१६] धुंदलाई हुई आंखें,
तेरी रअ़नाइयों की[१७] तमकनत को[१८] भूल जायेंगो।

---

१. मशाल २. प्रकाशमान ३. जीवन की सभा ४. स्वर्ग समान ५. श्वास ६. जागी हुई ७. क्षण ८. आगमन की ९. सुनहला १०. दुखी प्राण ११. आखिर १२. निष्ठुरताओं पर १३. मिठासें १४. उदास १५. एकांत में १६. बहुलता से १७. सुन्दरता की १८. शान को

पुकारेंगे तुझे तो लब कोई लज़्ज़त[1] न पायेंगे,
गुलू में[2] तेरी उल्फ़त के तराने सूख जायेंगे।

मुबादा[3] यादहाये अहदे-माज़ी[4] महव[5] हो जायें,
ये पारीना फ़साने[6] मौजहाये ग़म में[7] खो जायें।
मेरे दिल की तहों से तेरी सूरत धुल के बह जाये,
हरीमे-इश्क़ की शमअ़े-दरख़्शां बुझ के रह जाये।

मुबादा अजनबी दुनिया की ज़ुल्मत[8] घेर ले तुझ को।
मेरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझ को॥

---

१. आनन्द २. कंठ में ३. भगवान न करे कि ऐसा हो ४. पुरानी यादें ५. विस्मृत ६. पुरानी (प्रेम) कहानियां ७. ग़म की लहरों में ८. अंधकार

सोच

क्यों मेरा दिल शाद[1] नहीं है, क्यों ख़ामोश रहा करता हूँ ?
छोड़ो मेरी राम कहानी, मैं जैसा भी हूँ अच्छा हूँ ॥

मेरा दिल ग़मगीन है तो क्या, ग़मगीं ये दुनिया है सारी ।
ये दुख तेरा है न मेरा, हम सब की जागीर है प्यारी ॥

तू गर मेरी भी हो जाये, दुनिया के ग़म यूँही रहेंगे ।
पाप के फंदे, ज़ुल्म के बंधन, अपने कहे से कट न सकेंगे ॥

ग़म हर हालत में मोहलक[2] है, अपना हो या और किसी का ।
रोना-धोना, जी को जलाना, यूं भी हमारा यूं भी हमारा ॥

क्यों न जहां का ग़म अपना लें, बाद में सब तदबीरें सोचें ।
बाद में सुख के सपने देखें, सपनों की ताबीरें[3] सोचें ॥

बेफ़िक्रे धन-दौलत वाले, ये आख़िर क्यों खुश रहते हैं ?
इन का सुख आपस में बांटें, ये भी आख़िर हम जैसे हैं ॥

हम ने माना जंग कड़ी है, सर फूटेंगे खून बहेगा ।
ख़ून में ग़म भी बह जायेंगे, हम न रहें, ग़म भी न रहेगा ॥

---

१. ख़ुश २. घातक ३. स्वप्न-फल

रक़ीब से

आ कि वाबस्ता[1] हैं उस हुस्न की यादें तुझ से,
जिसने इस दिल को परीख़ाना[2] बना रक्खा है।
जिसकी उल्फ़त में भुला रक्खी थी दुनिया हम ने,
दहर को[3] दहर का अफ़साना बना रक्खा है।

आशना[4] हैं तेरे क़दमों से वो राहें जिन पर,
उसकी मदहोश जवानी ने इनायत की है।
कारवां गुज़रे हैं जिन से उसी रअ़नाई के,
जिसकी इन आंखों ने बेसूद[5] इबादत[6] की है।

तुझ से खेली हैं वो महबूब[7] हवायें जिनमें,
उसके मलबूस की[8] अफ़सुर्दा[9] महक बाक़ी है।
तुझ पे भी बरसा है उस बाम से[10] महताब का[11] नूर[12],
जिस में बीती हुई रातों की कसक बाक़ी है।

तूने देखी है वो पेशानी[13], वो रुख़्सार[14], वो होंट,
ज़िन्दगी जिन के तसव्वुर में लुटा दी हमने।
तुझ पे उट्ठी हैं वो खोई हुई साहिर[15] आंखें,
तुझ को मालूम है क्यों उम्र गंवा दी हमने।

---

१. सम्बद्ध २. परियों का घर ३. संसार को ४. परिचित ५. व्यर्थ ६. पूजा ७. प्रिय ८. लिबास की ९. मलिन १०. छत से ११. चांद का १२. प्रकाश १३. माथा १४. कपोल १५. जादूगर

हम पे मुश्तरका[१] हैं एहसान ग़मे-उल्फ़त के[२],
इतने एहसान कि गिनवाऊँ तो गिनवा न सकूं।
हमने इस इश्क़ में क्या खोया है क्या सीखा है ?
जुज़ तेरे[३] और को समझाऊं तो समझा न सकूं।

आजिज़ी[४] सीखी ग़रीबों की हिमायत सीखी,
यासो-हिरमान के[५], दुख दर्द के माने सीखे।
ज़ेरदस्तों के[६] मुसायब को[७] समझना सीखा,
सर्द आहों के, रुख़े-ज़र्द के[८] माने सीखे।

जब कहीं बैठ के रोते हैं वो बेकस जिन के,
अश्क आंखों में बिलकते हुए सो जाते हैं।
नातवानों[९] के निवालों पे झपटते हैं उक़ाब[१०],
बाज़ू तोले हुए मंडलाते हुए आते हैं।

जब कभी बिकता है बाज़ार में मज़दूर का गोश्त,
शाहराहों पे[११] ग़रीबों का लहू बहता है।
आग सी सीने में रह-रह के उबलती है न पूछ,
अपने दिल पे मुझे क़ाबू ही नहीं रहता है।

---

१. साझे २. प्रेम के दुखों के ३. तेरे अतिरिक्त ४. विनय ५. निराशाओं के ६. पीड़ित प्राणियों के ७. दुखों को ८. पीले चेहरे के ९. दुर्बलों के १०. बाज पक्षी ११. राजमार्गों पर

कुत्ते

ये गलियों के आवारा बेकार कुत्ते,
कि बख़्शा गया जिनको ज़ौक़े-गदाई[1] ।
ज़माने की फटकार सरमाया[2] इनका,
जहां-भर की दुतकार इनकी कमाई ।
न आराम शब को न राहत सवेरे,
ग़लाज़त में[3] घर नालियों में बसेरे ।
जो बिगड़ें तो इक दूसरे से लड़ा दो,
ज़रा एक रोटी का टुकड़ा दिखा दो ।
ये हर एक की ठोकरें खाने वाले,
ये फ़ाक़ों से उकता के मर जाने वाले ।
ये मज़लूम मख़लूक़[4] गर सर उठाये,
तो इन्सान सब सरकशी[5] भूल जाये ।
ये चाहें तो दुनिया को अपना बनालें,
ये आक़ाओं की हड्डियां तक चबालें ।
कोई इनको एहसासे-ज़िल्लत[6] दिला दे,
कोई इनकी सोई हुई दुम हिला दे ।

---

१. भीख मांगने की अभिरुचि २. निधि ३. गंदगी में ४. सृष्टि
५. अवज्ञा ६. अपमान की चेतना

तनहाई

फिर कोई आया दिले-ज़ार[1] ! नहीं, कोई नहीं !
राहरौ[2] होगा, कहीं और चला जायेगा।
ढल चुकी रात बिखरने लगा तारों का ग़ुबार,
लड़खड़ाने लगे एवानों में[3] ख़्वाबीदा[4] चिराग़,
सो गई रास्ता तक-तक के हर इक राहगुज़ार[5] ,
अजनबी ख़ाक ने धुंदला दिये क़दमों के सुराग़[6] ,
गुल करो[7] शम्में, बढ़ा दो मै-ओ-मीना-ओ-अयाग़[8] ,
अपने बेख़्वाब[9] किवाड़ों को मुक़फ़्फ़ल कर लो[10]
अब यहां कोई नहीं, कोई नहीं आयेगा।

---

१. दुखी मन २. राही ३. महलो में ४. सोये हुए ५. मार्ग ६. चिह्न ७. बुझा दो ८. सुराही, प्याले और शराब उठा दो। ९. जिनकी आंखों में नींद नहीं, अर्थात् खुले हुए १०. ताले लगा लो

चन्द रोज़ और मेरी जान !

चन्द रोज़ और मेरी जान ! फ़क़त[1] चन्द ही रोज़ !

ज़ुल्म की छाँओं मे दम लेने पे मजबूर हैं हम।
और कुछ देर सितम सहलें, तड़पलें, रोलें।
अपने अजदाद की[2] मीरास[3] है माज़ूर[4] हैं हम॥

जिस्म पे क़ैद है, जज़्बात पे ज़ंजीरें हैं।
फ़िक्र[5] महबूस है[6], गुफ़्तार पे[7] ताज़ीरें हैं[8]॥

अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते हैं!
ज़िन्दगी क्या किसी मुफ़लिस की क़बा[9] है जिसमें।
हर घड़ी दर्द के पेवंद लगे जाते हैं॥

लेकिन अब ज़ुल्म की मीआद के दिन थोड़े हैं।
इक ज़रा सब्र, कि फ़र्याद के दिन थोड़े हैं॥

अर्सा-ए-दहर की[10] झुलसी हुई वीरानी में,
हम को रहना है पे यूँही तो नहीं रहना है।
अजनबी हाथों का बेनाम गिरांबार सितम[11],
आज सहना है हमेशा तो नहीं सहना है॥

---

१. केवल २. पुरखों की ३. दाय ४. विवश ५. विचार
६. क़ैद में हैं अर्थात् जकड़े हुए हैं ७. बोलने पर ८. दण्ड मिलता है
९. निर्धन का कुर्ता १०. संसार-रूपी मैदान की ११. भारी अत्याचार

ये तेरे हुस्न से लिपटी हुई आलाम की[1] गर्द,
अपनी दो-रोज़ा जवानी की शिकस्तों का शुमार[2] ।
चान्दनी रातों का बेकार दहकता हुआ दर्द,
दिल की बेसूद[3] तड़प, जिस्म की मायूस पुकार ॥

चन्द रोज़ और मेरी जान ! फ़क़त चन्द ही रोज !

---

१. दुखों की २. गणना ३. व्यर्थ

बोल·····

बोल कि लब आज़ाद हैं तेरे,
बोल, ज़बां अब तक तेरी है।
तेरा सुतवां[1] जिस्म है तेरा,
बोल कि जां अब तक तेरी है।

देख कि आहंगर की[2] दुकां में,
तुन्द[3] हैं शोले, सुर्ख है आहन[4]।
खुलने लगे क़ुफ़्लों के[5] दहाने[6],
फैला हर इक ज़ंजीर का दामन।

बोल, ये थोड़ा वक़्त बहुत है,
जिस्मो-ज़बां की मौत से पहले।
बोल कि सच ज़िन्दा है अब तक,
बोल, जो कुछ कहना है कहले।

---

१. सीधा २. लोहार ३. तेज़ ४. लोहा ५. तालों के ६. मुंह

आख़री ख़त

वो वक़्त मेरी जान बहुत दूर नहीं है
जब दर्द से रुक जायेंगी सब ज़ीस्त की[1] राहें
और हद से गुज़र जायेगा अन्दोहे-निहानी[2]
थक जायेंगी तरसी हुई नाकाम निगाहें
छिन जायेंगे मुझ से मेरे आंसू मेरी आहें
छिन जायेगी मुझसे मेरी बेकार जवानी
शायद मेरी उल्फ़त को बहुत याद करोगी
अपने दिले - मासूम को नाशाद[3] करोगी
आओगी मेरी गोर पे[4] तुम अश्क[5] बहाने
नौख़ेज़[6] बहारों के हसीं फूल चढ़ाने
शायद मेरी तुरबत को[7] भी ठुकरा के चलोगी
शायद मेरी बेसूद वफ़ाओं पे हंसोगी
इस वजअ़-ए-करम का[8] भी तुम्हें पास[9] न होगा
लेकिन दिले - नाकाम को एहसास न होगा
अलक़िस्सा[10] माआले-ग़मे-उल्फ़त पे[11] हँसो तुम
या अश्क बहाती रहो, फ़र्याद करो तुम
माज़ी पे[12] नदामत हो तुम्हें या कि मसर्रत
खामोश पड़ा सोएगा वामांदा - ए - उल्फ़त[13]

---

१. जीवन की २. भीतरी दुःख ३. दुखित ४. क़ब्र पर ५. आँसू ६. नई ७. क़ब्र को ८. कृपा के ढंग का ९. लिहाज़ १०. संक्षेप में यह कि ११. प्रेम के दुख के परिणाम पर १२. अतीत पर १३. प्रेम के हाथों श्रान्त

ऐ दिले-बेताब ठहर !

तीरगी[1] है कि उमड़ती ही चली आती है,
शब की[2] रग-रग से लहू फूट रहा हो जैसे।
चल रही है कुछ इस अंदाज़ से नब्ज़े - हस्ती[3] ,
दोनों आलम का[4] नशा टूट रहा हो जैसे।
रात का गर्म लहू और भी बह जाने दो,
यही तारीकी[5] तो है ग़ाज़ा-ए-रुख़सारे-सहर[6],
सुबह होने ही को है ऐ दिले - बेताब ठहर !
अभी ज़ंजीर छनकती है पसे-पर्दा - ए - साज़[7] ,
मुतलक़-उलहुक्म[8] है शीराज़ाए-असबाब[9] अभी।
साग़रे - नाब में[10] आंसू भी ढलक जाते हैं,
लग़ज़िशे-पा में[11] है पाबंदी-ए-आदाब[12] अभी।
अपने दीवानों को दीवाना तो बन लेने दो।
अपने मैख़ानों को मैख़ाना तो बन लेने दो ॥
जल्द ये सतवते-असबाब[13] भी उठ जायेगी।
ये गिरांबारी-ए-आदाब[14] भी उठ जायेगी ॥
ख़्वाह ज़ंजीर छनकती ही छनकती ही रहे ॥

---

१. अन्धकार २. रात की ३. जीवन की नाड़ी ४. दुनियाओं का ५. अन्धकार ६. सुबह के गालों की लालिमा ७. साज़ के पर्दे के पीछे ८. सर्वोपरि आज्ञा देने वाला ९. कारणों की एकत्रता १०. शराब के प्याले में ११. पाँव की डगमगाहट में १२. झूठे शिष्टाचार की पाबन्दी १३. कारणों का दबदबा या आतंक १४. (झूठे) शिष्टाचार का असह्य बोझ

मौज़ूए-सुख़न†

गुल हुई जाती है[1] अफ़सुर्दा[2] सुलगती हुई शाम,
घुल के निकलेगी अभी चश्मा-ए-महताब से[3] रात।
और—मुश्ताक़ निगाहों से सुनी जायेगी,
और—उन हाथों से मस[4] होंगे ये तरसे हुए हात॥

उन का आंचल है कि रुख़सार[5] कि पैराहन[6] है,
कुछ तो है जिस से हुई जाती है चिलमन रंगीं।
जाने उस ज़ुल्फ़ की मौहूम[7] घनी छाओं में,
टिमटिमाता है वो आवेज़ा[8] अभी तक कि नहीं?

आज फिर हुस्ने-दिलारा की[9] वही धज होगी,
वही ख़्वाबीदा सी[10] आँखें, वही काजल की लकीर।
रंगे-रुख़सार पे[11] हल्का सा वो ग़ाज़े का ग़ुबार,
संदली हाथ पे धुंदली सी हिना की[12] तहरीर[13]॥

अपने अफ़कार की[14], अशआर की[15] दुनिया है यही।
जाने-मज़मूं[16] है यही, शाहिदे-माने[17] है यही॥

---

† काव्य-विषय

१. बुझ रही है २. उदास ३. चांद के चश्मे से ४. स्पर्श ५. कपोल ६. लिबास ७. भ्रममूलक ८. कान का बुंदा ९. रमणीक सौन्दर्य की १०. स्वप्निल सी ११. कपोलों के रंग पर १२. महंदी की १३. चित्रकारी १४. रचनाओं की १५. शेरों की १६. विषय की जान १७. अर्थों का प्रत्यक्षदर्शी या साक्षी

आज तक सुर्ख़ी-सियाह सदियों के साये के तले,
आदमो-हव्वा की औलाद पे[1] क्या गुज़री है ?
मौत और ज़ीस्त[2] की रोज़ाना सफ़-आराई में[3] ,
हम पे क्या गुज़रेगी, अजदाद पे[4] क्या गुज़री है ?

इन दमकते हुए शहरों की फ़रावां[5] मख़लूक़[6] ।
क्यों फ़क़त मरने की हसरत में जिया करती है ?
ये हसीं खेत, फटा पड़ता है जोबन जिनका,
किस लिए इन में फ़क़त भूख उगा करती है ?

ये हर एक सिम्त[7] पुरअसरार[8] कड़ी दीवारें,
जल बुझे जिन में हज़ारों की जवानी के चिराग़ ।
ये हर एक गाम पे[9] उन ख़्वाबों की मक़्तल-गाहें[10],
जिनके परतौ से[11] चिराग़ां[12] हैं हज़ारों के दिमाग़ ॥

ये भी हैं ऐसे कई और भी मज़मूं[13] होंगे,
लेकिन उस शोख़ के आहिस्ता से खुलते हुए होंट,
हाय उस जिस्म के क़म्बख़्त दिलावेज़ ख़ुतूत[14],
आप ही कहिये कहीं ऐसे भी अफ़सूं[15] होंगे ?

अपना मौज़ू-ए-सुख़न इन के सिवा और नहीं !
तबए-शायर का[16] वतन इन के सिवा और नहीं !

---

१. संतान पर २. जीवन ३. संग्राम में ४. पुरखों पर ५. प्रचुर ६. जनता ७. ओर ८. रहस्यपूर्ण ९. पग पर १०. बध-स्थान ११. प्रतिबिम्ब से १२. दीप्तिमान १३. विषय १४. हृदयाकर्षक रेखायें (बनावट) १५. जादू १६. शायर की प्रकृति

आज की रात

आज की रात साज़े-दर्द न छेड़ !

दुख से भरपूर दिन तमाम हुए
और कल की ख़बर किसे मालूम ?
दोशो-फ़र्दा की[1] मिट चुकी हैं हदूद[2]
हो न हो अब सहर किसे मालूम ?

ज़िन्दगी हेच ! लेकिन आज की रात
एज़दियत[3] है मुमकिन आज की रात

आज की रात साज़े-दर्द न छेड़ !

अब न दोहरा फ़सान-हाए-अलम[4]
अपनी क़िस्मत पे सोगवार[5] न हो
फ़िक्रे-फ़र्दा[6] उतार दे दिल से
उम्रे-रफ़्ता पे[7] अश्कबार न हो[8] ।

अहदे-ग़म की हिकायतें[9] मत पूछ
हो चुकीं सब शिकायतें मत पूछ

आज की रात साज़े-दर्द न छेड़ !

१. अतीत और भविष्य की २. सीमायें ३. ख़ुदाई ४. दुख की कहानियां ५. उदास ६. कल की चिन्ता ७. बीती आयु पर ८. आंसू न बहा ९. दुख के दिनों की कहानियां

शाहराह

एक अफ़सुर्दा[1] शाहराह[2] है दराज़[3],
दूर उफ़क़[4] पर नज़र जमाये हुए।
सर्द मिट्टी पे अपने सीने के,
सुरमगीं[5] हुस्न को बिछाये हुए॥

जिस तरह कोई ग़म-ज़दा[6] औरत,
अपने वीरां कदे में[7] महवे-ख़्याल[8]।
वस्ले - महबूब के[9] तसव्वुर में[10],
मू-ब-मू[11] चूर, अज़ू-अज़ू[12] निढाल॥

---

१. उदास २. राजमार्ग ३. फैली हुई ४. क्षितिज पर ५. सुरमे के रंग जैसा ६. शोकातुर ७. वीरान घर में ८. चिंताओं में डूबी हुई ९. पिया मिलन के १०. कल्पना में ११. बाल-बाल १२. अंग-अंग

मेरे हमदम मेरे दोस्त !

गर मुझे इस का यक़ीं हो, मेरे हमदम मेरे दोस्त !
गर मुझे इस का यक़ीं हो कि तेरे दिल की थकन
तेरी आंखों की उदासी, तेरे सीने की जलन
मेरी दिल-जोई, मेरे प्यार से मिट जायेगी
गर मेरा हर्फ़े-तसल्ली[1] वो दवा हो जिस से
जी उठे फिर तेरा उजड़ा हुआ बेनूर दिमाग़
तेरी पेशानी से धुल जायें ये तज़लील के[2] दाग़
तेरी बीमार[3] जवानी को शफ़ा हो जाये
गर मुझे इस का यक़ीं हो, मेरे हमदम मेरे दोस्त
मैं तुझे भींच लूं सीने से लगा लूं तुझ को
रोज़ो-शब[4] , शामो-सहर[5] मैं तुझे बहलाता रहूँ
मैं तुझे गीत सुनाता रहूं हल्के, शीरीं,
आबशारों के[6] , बहारों के, चमन-ज़ारों के[7] गीत
आमदे-सुबह के[8] , महताब के[9] सय्यारों के[10] गीत
तुझ से मैं हुस्नो-मोहब्बत की हिकायात[11] कहूं

---

१. ढारस का शब्द २. अपमान के ३. रोगी ४. दिन-रात ५. सुबह-शाम ६. झरनों के ७. बागों के ८. सुबह के आगमन के ९. चाँद के १०. नक्षत्रों के ११. कहानियाँ

कैसे मग़रूर हसीनाओं के बरफ़ाब से जिस्म
गर्म हाथों की हरारत में[1] पिघल जाते हैं
कैसे इक चेहरे के ठहरे हुए मानूस नक़ूश[2]
देखते - देखते यकलख़्त[3] बदल जाते है
किस तरह आरिज़े-महबूब का[4] शफ़्फ़ाफ़ बिलूर[5]
यक-ब-यक बादा-ए-अहमर से[6] दहक जाता है
कैसे गुलचीं[7] के लिए झुकती है ख़ुद शाख़े-गुलाब[8]
किस तरह रात का एवान महक जाता है
यूँ ही गाता रहूं, गाता रहूं, तेरी खातिर
गीत बुनता रहूं, बैठा रहूं, तेरी ख़ातिर
पर मेरे गीत तेरे दुख का मुदावा[9] तो नहीं
नग़मा जर्राह[10] नहीं, मूनसो-ग़मख़्वार[11] सही
गीत नश्तर तो नहीं, मरहमे-आज़ार[12] सही
मेरे आज़ार का चारा नहीं नश्तर के सिवा
और यह सफ़्फ़ाक मसीहा[13] मेरे क़ब्ज़े में नहीं
इस जहां के किसी ज़ी-रूह के[14] क़ब्ज़े में नहीं
हां मगर तेरे सिवा, तेरे सिवा, तेरे सिवा !

---

१. गर्मी से २. परिचित नैन-नक्श ३. एकाएक ४. प्रेमिका के कपोलों का ५. स्वच्छ कांच ६. शराब की लाली से ७. फूल चुनने वाले ८. गुलाब की शाखा ९. इलाज १०. शल्य चिकित्सक ११. हमदर्द १२. दुख-रूपी घाव की मरहम १३. निर्दयी चिकित्सक १४. प्राणी के

लौहो-क़लम

हम परवरिशे लौहो-क़लम[1] करते रहेंगे।
जो दिल पे गुज़रती है, रक़म[2] करते रहेंगे॥

असबाबे - ग़मे - इश्क़[3] बहम[4] करते रहेंगे।
वीरानीए - दौरां पे[5] करम[6] करते रहेंगे॥

हां तल्ख़ी - ए - अय्याम[7] अभी और बढ़ेगी।
हां अहले-सितम[8] मश्क़े-सितम[9] करते रहेंगे॥

मन्ज़ूर ये तल्ख़ी[10], ये सितम हमको गवारा।
दम है तो मुदावा-ए-अलम[11] करते रहेंगे॥

बाक़ी है लहू दिल में तो हर अश्क से[12] पैदा।
रंगे - लबो - रुख़सारे - सनम[13] करते रहेंगे॥

इक तर्ज़े-तग़ाफ़ुल[14] है सो वो उनको मुबारक।
इक अर्ज़े - तमन्ना[15] है सो हम करते रहेंगे॥

(जेल में)

---

१. तलवार और क़लम का पालन २. लिखना ३. इश्क़ के ग़म के साधन ४. जुटाना ५. संसार की वीरानी ६. कृपा ७. दिनों (जीवन) की कटुता ८. अत्याचारी ९. अत्याचार करने का अभ्यास १०. कटुता ११. वेदना का इलाज १२. आँसू से १३. प्रेमिका के होंटों और कपोलों का रंग १४. लापरवाई का ढंग १५. इच्छा प्रकट करना

·····तुम्हारे हुस्न के नाम !

सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम!

बिखर गया जो कभी रंगे-पैरहन[1] सरे-बाम[2]
निखर गई है कभी सुबह, दोपहर, कभी शाम
कहीं जो क़ामते-ज़ेबा पे[3] सज गई है क़बा[4]
चमन में सर्वो-सनोबर[5] संवर गये हैं तमाम
बनी बिसाते-ग़ज़ल[6] जब डबो लिये दिल ने
तुम्हारे साया-ए-रुख़्सारो-लब में[7] साग़रो-जाम
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम!

तुम्हारे हात पे[8] है ताबिशे-हिना[9] जब तक
जहां में बाक़ी है दिलदारिये-उरूसे-सुख़न[10]
तुम्हारा हुस्न जवां है तो मेहरबां है फ़लक[11]
तुम्हारा दम है तो दमसाज़[12] है हवा-ए-वतन[13]
अगरचे तंग हैं औक़ात[14], सख़्त हैं आलाम[15]
तुम्हारी याद से शीरीं[16] है तल्ख़ी-ए-अय्याम[17]
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम!

(जेल में)

---

१. लिबास का रंग २. छत पर ३. हृदयाकर्षक क़द (शरीर) पर ४. कुर्ता (लिबास) ५. वृक्षों के नाम ६. ग़ज़ल बन गई ७. कपोलों और होंटों की छाया में ८. हाथ पर ९. महंदी की आभा १०. कविता रूपी दुल्हन की दिलदारी ११. आकाश १२. मित्र १३. देश की हवा १४. समय १५. दुख १६. मधुर १७ जीवन की कटुता

दो इश्क़

(१)

ताज़ा हैं अभी याद में ऐ साक़ी-ए-गुलफ़ाम[१] ,
वो अक्से-रुख़े-यार से[२] लहके हुए अय्याम[३] ।
वो फूल-सी खिलती हुई दीदार की[४] साअ़त[५] ,
वो दिल-सा धड़कता हुआ उम्मीद का हंगाम[६] ॥

उम्मीद कि लो जागा ग़मे-दिल का नसीबा,
लो शौक़ की[७] तरसी हुई शब हो गई आखिर।
लो डूब गये दर्द के बेख़्वाब सितारे,
अब चमकेगा बेसब्र निगाहों का मुक़द्दर ॥

इस बाम से निकलेगा तेरे हुस्न का ख़ुरशीद[८] ,
उस कुंज से फूटेगी किरन रंगे-हिना की[९] ।
इस दर से बहेगा तेरी रफ़्तार का सीमाब[१०],
इस राह पर फूलेगी शफ़क़ तेरी क़बा की[११] ॥

---

१. फूल जैसे रंग वाला २. प्रेमिका के मुखड़े के प्रतिबिम्ब से ३. दिन (जीवन) ४. दर्शन की ५. क्षण ६. समय ७. इश्क़ की ८. सूरज ९. महंदी के रंग की १०. पारा ११. कुत (लिबास) की

फिर देखे हैं वो हिज्र के तपते हुए दिन भी,
जब फ़िक्रे-दिलो-जां में फ़ुग़ां भूल गई है।
हर शब वो सियाह बोझ कि दिल बैठ गया है,
हर सुबह की लौ तीर-सी सीने में लगी है॥

तनहाई में क्या-क्या न तुझे याद किया है,
क्या-क्या न दिले-ज़ार ने ढूंडी हैं पनाहें।
आंखों से लगाया है कभी दस्ते-सबा को[1]
डाली हैं कभी गर्दने-महताब में[2] बांहें॥

(२)

चाहा है इसी रंग में लैलाए-वतन को[3],
तड़पा है इसी तौर से[4] दिल उसकी लगन में।
ढूंडी है युंही शौक़ ने[5] आसाइशे-मंज़िल[6],
रुख़्सार के[7] ख़म में[8] कभी काकुल[9] की शिकन[10] में॥

इस जाने-जहां को भी युंही क़ल्बो-नज़र ने[11],
हंस-हंस के सदा[12] दी, कभी रो-रो के पुकारा।
पूरे किये सब हर्फ़े-तमन्ना के[13] तक़ाज़े,
हर दर्द को उजियाला, हर इक ग़म को संवारा॥

---

१. प्रभात समीर के हाथ को २. चाँद की गर्दन में ३. देश-रूपी प्रेमिका को ४. प्रकार ५. इश्क़ ने ६. मंज़िल का सुख ७. कपोलों के ८. वक्रता में ९. केशों १०. बल ११. दिल और नज़र ने १२. आवाज़ १३. अभिलाषा के

वापस नहीं फेरा कोई फ़र्मान[१] जुनूं का[२],
तनहा नहीं लौटी कभी आवाज़ जरस की[३]।
ख़ैरियते-जां[४], राहते-तन[५], सेहते-दामां[६],
सब भूल गईं मसलहतें अहले-हवस की[७]॥

इस राह में जो सब पे गुज़रती है वो गुज़री,
तनहा पसे-ज़िंदां[८], कभी रुसवा सरे-बाज़ार[९]।
गरजे हैं बहुत शैख़ सरे-गोशा-ए-मिंबर[१०],
कड़के हैं बहुत अहले-हुकम[११] बर-सरे-दरबार[१२]॥

छोड़ा नहीं ग़ैरों ने कोई नावके-दुश्नाम[१३]
छूटी नहीं अपनों से कोई तर्ज़े-मलामत[१४]।
इस इश्क़ न उस इश्क़ पे नादिम है मगर दिल,
हर दाग़ है इस दिल में बजुज़[१५] दाग़े-नदामत[१६]॥

---

१. आदेश २. उन्माद का ३. घड़ियाल की ४. जान की ख़ैरियत ५. तन का सुख ६. बिन फटा दामन ७. लोलुपों की ८. कारागार में ९. बीच बाज़ार में १०. मस्जिद के चबूतरे से ११. बादशाह १२. बीच दरबार में १३. गालियों के तीर १४. भर्त्सना १५. सिवाय १६. पछतावे का दाग़

निसार मैं तेरी गलियों पे···

निसार मैं तेरी गलियों पे ऐ वतन कि जहां,
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले।
जो कोई चाहने वाला तवाफ़ को[1] निकले,
नज़र चुराके चले, जिस्मो-जां बचाके चले।

है अहले-दिल के लिए अब ये नज़्मे-बस्तो-कुशाद[2],
कि संगो-ख़िश्त[3] मुक़य्यद[4] हैं और सग[5] आज़ाद।

बहुत है ज़ुल्म के दस्ते-बहाना-जू के[6] लिये,
जो चन्द अहले-जुनूँ तेरे नाम-लेवा है।
बने हैं अहले-हवस[7] मुद्दई भी, मुन्सिफ़ भी,
किसे वकील करें, किससे मुन्सिफ़ी चाहें?

मगर गुज़ारने वालों के दिन गुज़रते हैं,
तेरे फ़िराक़ में यूँ सुबहो-शाम करते हैं।

बुझा जो रोज़ने-ज़िंदां[8] तो दिल ये समझा है,
कि तेरी मांग सितारों से भर गई होगी।
चमक उठे हैं सलासिल[9] तो हमने जाना है,
कि अब सहर[10] तेरे रुख पर[11] बिखर गई होगी।

१. परिक्रमा के लिए २. खोल-बांध की व्यवस्था ३. ईंट पत्थर ४. क़ैद ५. कुत्ते ६. बहाना बनाने वाले के हाथ के ७. लोलुप ८. कारागार का झरोखा ९. बेड़ियां १०. सुबह ११. मुखड़े पर

ग़रज़ तसव्वुरे - शामो - सहर में[1] जीते हैं,
गिरफ़्ते - साया - ए - दीवारो - दर में[2] जीते हैं।

युँही हमेशा उलझती रही है ज़ुल्म से खल्क़[3],
न उनकी रस्म नई है, न अपनी रीति नई।
युँही हमेशा खिलाये हैं हमने आग में फूल,
न उनकी हार नई है न अपनी जीत नई।

इसी सबब से फ़लक का गिला नहीं करते,
तेरे फ़िराक़ में हम दिल बुरा नहीं करते।

गर आज तुझसे जुदा हैं तो कल बहम[4] होंगे,
ये रात भर की जुदाई तो कोई बात नहीं।
गर आज औज पे[5] है तालए-रक़ीब[6] तो क्या!
ये चार दिन की खुदाई तो कोई बात नहीं।

ये तुझसे अहदे - वफ़ा उस्तवार[7] रखते हैं,
इलाजे - गर्दिशे - लैलो - नहार[8] रखते हैं।

(जेल में)

---

१. सुबह और शाम की कल्पना में २. दीवारों और दरवाज़ों के सायों की पकड़ में ३. जनता ४. इकट्ठे ५. ऊंचाई पर ६. प्रतिद्वन्द्वी का भाग्य ७. प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा को सुदृढ़ ८. रात-दिन के चक्कर का इलाज

याद

दश्ते - तनहाई में[1] ऐ जाने - जहां[2] लर्ज़ां[3] है,
तेरी आवाज़ के साये, तेरे होंटों के सराब[4]।
दश्ते - तनहाई में, दूरी के ख़सो-ख़ाक[5] तले,
खिल रहे हैं तेरे पहलू के समन और गुलाब।

उठ रही है कहीं क़ुरबत[6] से तेरी सांस की आंच,
अपनी ख़ुशबू में सुलगती हुई मद्धम - मद्धम।
दूर, उफ़क़[7] पार, चमकती हुई क़तरा-क़तरा,
गिर रही है तेरी दिलदार नज़र की शबनम।

इस क़दर प्यार से, ए जाने - जहां रक्खा है,
दिल के रुख़सार पे[8] इस वक़्त तेरी याद ने हात[9]।
यूं गुमां होता है, गरचे है अभी सुबहे-फ़िराक़[10],
ढल गया हिज्र का[11] दिन, आ भी गई वस्ल की[12] रात।

(जेल में)

---

१. एकान्त के जंगल में २. संसार के जीवन (प्रेमिका)
३. कम्पायमान ४. मरीचिका ५. कूड़ा करकट, घास और मिट्टी
६. सामीप्य ७. क्षितिज ८. कपोल पर ९. हाथ १०. विरह की सुबह ११. वियोग १२. मिलन की

दर्द आयेगा दबे पांव·····

और कुछ देर में, जब फिर मेरे तनहा दिल को,
फ़िक्र आ लेगी कि तनहाई का क्या चारा करे।
दर्द आयेगा दबे पांव, लिये सुर्ख़ चिराग़,
वो जो इक दर्द धड़कता है कहीं दिल से परे।

शोला - ए- दर्द जो पहलू में लपक उट्ठेगा।
दिल की दीवार पे हर नक़्श[1] दमक उट्ठेगा॥

हल्क़ा-ए-ज़ुल्फ़[2] कहीं, गोशा-ए-रुख़्सार[3] कहीं!
हिज्र का दश्त[4] कहीं, गुलशने-दीदार[5] कहीं!
लुत्फ़ की बात कहीं, प्यार का इक़रार कहीं!

दिल से फिर होगी मेरी बात कि ऐ दिल, ऐ दिल!
ये जो महबूब बना है तेरी तनहाई का,
ये तो महमां है घड़ी भर का, चला जाएगा!
इससे कब तेरी मुसीबत का मुदावा[6] होगा?

मुश्तअ़ल[7] होके अभी उट्ठेंगे वहशी साये।
ये चला जायेगा, रह जायेंगे बाक़ी साये॥

रात भर जिन से तेरा ख़ून ख़राबा होगा!

---

१. चित्र २. केशों के घूंघर ३. कपोलों का कोण ४. जंगल
५. दर्शनों का बाग़ ६. इलाज ७. प्रज्वलित

जंग ठहरी है कोई खेल नहीं है ऐ दिल !
दुश्मने-जां हैं सभी, सारे के सारे क़ातिल,
ये कड़ी रात भी, ये साये भी, तनहाई भी,
दर्द और जंग में कुछ मेल नहीं है ऐ दिल !

लाओ सुलगाओ कोई जोशो-ग़ज़ब का[1] अंगार[2] !
तैश की[3] आतिशे-जर्रार[4] कहीं से लाओ,
वो दहकता हुआ गुलज़ार कहीं से लाओ,
जिसमें गर्मी भी है, हरकत भी, तवानाई[5] भी !

हो न हो अपने क़बीले का भी कोई लश्कर,
मुन्तज़िर होगा अंधेरे की फ़सीलों के[6] उधर ।

इनकी शोलों के रजज़[7] अपना पता तो देंगे,
खैर, हम तक न वो पहुंचे भी, सदा[8] तो देंगे,
दूर कितनी है अभी सुबह, बता तो देंगे !

(जेल में)

---

१. उत्तजना और क्रोध का २. अंगारा ३. क्रोध की ४. प्रचंड अग्नि ५. शक्ति ६. शहरपनाहों के ७. वे शेर जो युद्धक्षेत्र में स्वयं पढ़े जाते हैं ८. आवाज़

कोई आशिक़ किसी महबूबा से

याद की राहगुज़र जिस पे इसी सूरत से
मुद्दतें बीत गई हैं तुम्हें चलते-चलते
ख़त्म हो जाये जो दो-चार क़दम और चलो
मोड़ पड़ता है जहां दश्ते-फ़रामोशी का[1]
जिससे आगे न कोई मैं हूं न कोई तुम हो
सांस थामे हैं निगाहें कि न जाने किस दम
तुम पलट आओ, गुज़र जाओ या मुड़कर देखो
गरचे वाक़िफ़ हैं निगाहें कि ये सब धोखा है
गर कहीं तुमसे हम-आग़ोश[2] हुई फिर से नज़र
फूट निकलेगी वहां और कोई राहगुज़र[3]
फिर उसी तरह जहां होगा मुक़ाबिल पैहम[4]
साया-ए-ज़ुल्फ़ का[5] और जुंबिशे-बाज़ू का[6] सफ़र
दूसरी बात भी झूठी है कि दिल जानता है
यां कोई मोड़, कोई दश्त, कोई घात नहीं
जिसके पर्दे में मेरा माहे-रवां[7] डूब सके
तुमसे चलती रहे ये राह, युंही अच्छा है
तुमने मुड़ कर भी न देखा तो कोई बात नहीं।

(जेल में)

---

१. विस्मृति के जंगल का २. आलिंगन-बद्ध ३. मार्ग ४. निरंतर सामना ५. केशों की छाया ६. बांहों के हिलने डोलने का ७. गतिशील चाँद

शीशों का मसीहा[1] कोई नहीं !

मोती हो कि शीशा, जाम[2] कि दर[3]
जो टूट गया सो टूट गया
कब अश्कों से[4] जुड़ सकता है
जो टूट गया, सो छूट गया

तुम नाहक़ टुकड़े चुन-चुन कर
दामन में छुपाये बैठे हो
शीशों का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाये बैठे हो

शायद कि इन्हीं टुकड़ों में कहीं
वो साग़रे-दिल[5] है जिसमें कभी
सद नाज़ से[6] उतरा करती थी
सहबाए-ग़मे-जानां की[7] परी

फिर दुनिया वालों ने तुम से
ये साग़र लेकर फोड़ दिया
जो मै थी बहा दी मिट्टी में
मेहमान का शह-पर[8] तोड़ दिया

---

१. हज़रत मसीह (बीमारों को अच्छा और मुर्दों को जीवित करने वाला) २. शराब का प्याला ३. दरवाज़ा ४. आँसुओं से ५. हृदय रूपी शराब का प्याला ६. बड़े गर्व से ७. प्रेयसी के ग़म की शराब की ८. सब से बड़ा और मज़बूत पंख

ये रंगीं रेज़े[1] हैं शाहिद
उन शोख बलूरी सपनों के
तुम मस्त जवानी में जिन से
ख़लवत को[2] सजाया करते थे

नादारी[3] , दफ़्तर, भूख और ग़म
इन सपनों से टकराते रहे
बेरहम था चौमुख पथराओ
ये कांच के ढांचे क्या करते

या शायद इन ज़रों में कहीं
मोती है तुम्हारी इज़्ज़त का
वो जिस से तुम्हारी इज्ज़ पे भी
शमशाद-क़दों ने[4] रश्क[5] किया

इस माल की धुन में फिरते थे
ताजिर भी बहुत, रहज़न[6] भी बहुत
है चोर नगर, यां मुफ़लिस की
गर जान बची तो आन गई

ये साग़रो-शीशे लालो-गुहर
सालम हों तो क़ीमत पाते हैं
यूं टुकड़े-टुकड़े हों तो फ़क़त
चुभते हैं, लहू रुलवाते हैं

---

१. रंगीन टुकड़े २. एकांत या शयनागार को ३. दारद्रता
४. शमशाद नामक वृक्ष के समान ऊँचे क़द वालों ने ५. ईर्ष्या ६. डाकू

तुम नाहक़ शीशे चुन-चुन कर
दामन में छुपाये बैठे हो
शीशों का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाये बैठे हो

यादों के गिरेबानों के रफ़ू
पर दिल की गुज़र कब होती है
इक बख़िया उधेड़ा, इक सीया
यूं उम्र बसर कब होती है

इस कारगहे-हस्ती में[1] जहां
ये साग़र शीशे ढलते हैं
हर शै का बदल मिल सकता है
सब दामन पुर हो सकते हैं

जो हाथ बढ़े यावर[2] है यहां
जो आंख उठे, वो बख़्तावर[3]
यां धन दौलत का अन्त नहीं
हों घात में डाकू लाख मगर

कब लूट-झपट से हस्ती की
दूकानें ख़ाली होती हैं
यां परबत-परबत हीरे हैं
यां सागर-सागर मोती हैं

---

१. संसार में २. सहायक ३. भाग्यवान

कुछ लोग हैं जो इस दौलत पर
पर्दे लटकाते फिरते हैं
हर परबत को, हर सागर को
नीलाम चढ़ाते फिरते हैं

कुछ वो भी हैं जो लड़-भिड़ कर
ये पर्दे नोच गिराते हैं
हस्ती के उठाईगीरों की
हर चाल उल्झाये जाते हैं

इन दोनों में रन[1] पड़ता है
नित बसती-बसती, नगर-नगर
हर बसते घर के सीने में
हर चलती राह के माथे पर

ये कालक भरते फिरते हैं
वो जोत जगाते रहते हैं
ये आग लगाते फिरते हैं
वो आग बुझाते रहते हैं

सब साग़र शीशे, लालो-गुहर
इस बाज़ी में बिद जाते हैं
उट्ठो सब ख़ाली हाथों को
इस रन से बुलावे आते हैं !

(जेल में)

---

१. रण (संघर्ष)

अंजाम[1]

हैं लबरेज़[2] आहों से ठंडी हवाएं,
उदासी में डूबी हुई हैं घटाएं।
मोहब्बत की दुनिया पे शाम आ चुकी है,
सियाह-पोश[3] हैं ज़िन्दगी की फ़ज़ाएं[4]।

मचलती हैं सीने में लाख आरज़ूएं[5],
तड़पती हैं आँखों में लाख इल्तजाएं[6]।
तग़ाफ़ुल[7] के आग़ोश[8] में सो रहे हैं,
तुम्हारे सितम[9] और मेरी वफ़ाएं।

मगर फिर भी ऐ मेरे मासूम[10] क़ातिल[11]!
तुम्हें प्यार करती हैं मेरी दुआएं!!

---

१. अन्त, परिणाम २. भरी हुई ३. अन्धकारपूर्ण ४. जीवन का वातावरण ५. अभिलाषाएँ ६. आत्म-निवेदन ७. उदासीनता ८. गोद ९. अत्याचार १०. अबोध ११. हत्यारे

हसीना-ए-ख़याल[1] से

मुझे देदे--

रसीले होंट, मासूमाना पेशानी[2], हसीं आंखें,
कि मैं इक बार फिर रंगीनियों में ग़र्क़ हो जाऊं,
मेरी हस्ती को[3] तेरी इक नज़र आग़ोश[4] में ले ले,
हमेशा के लिए इस दाम[5] में महफ़ूज़[6] हो जाऊं,
ज़िया-ए-हुस्न[7] से ज़ुल्माते-दुनिया[8] में न फिर आऊं।

गुज़श्ता[9] हसरतों[10] के दाग़ मेरे दिल से धुल जाएं,
मैं आने वाले ग़म की फ़िक्र से आज़ाद हो जाऊं।

मेरे माज़ी व मुस्तक़बिल[11] सरासर महव[12] हो जाएं,
मुझे वो इक नज़र, इक जाविदानी[13] सी नज़र दे दे।

(ब्राउनिंग)

---

१. कल्पना-सुन्दरी २. भोलापन लिए हुए माथा ३. अस्तित्व को ४. गोद ५. फन्दे ६. सुरक्षित ७. सौन्दर्य की आभा ८. संसार के अन्धकार ९. पुराने १०. अतृप्त अभिलाषाओं ११. भूत व भविष्य १२. विस्मृत १३. अमर

इन्तज़ार

गुज़र रही हैं शबो-रोज़[1] तुम नहीं आतीं।
रियाज़े-ज़ीस्त[2] है आज़ुर्दा - ए - बहार[3] अभी,
मेरे ख़याल की दुनिया है सोगवार[4] अभी।

जो हसरतें[5] तेरे ग़म की कफ़ील[6] हैं प्यारी,
अभी तलक मेरी तनहाइयों में बसती हैं।
तवील[7] रातें अभी तक तवील हैं प्यारी,
उदास आंखें अभी इन्तज़ार करती हैं।

बहारे-हुस्न[8] पे पाबन्दी-ए-जफ़ा[9] कब तक ?
ये आज़माइशे - सब्रे - गुरेज़-पा[10] कब तक ?

क़सम तुम्हारी बहुत ग़म उठा चुका हूँ मैं।
ग़लत था दावा-ए-सब्रो-शकेब[11], आ जाओ।
क़रारे - ख़ातिरे - बेताब थक गया हूं मैं॥

---

१. रात-दिन २. जीवन का उद्यान ३. वसन्त-ऋतु से वंचित ४. शोकपूर्ण ५. अतृप्त आकांक्षाएँ ६. ज़मानत ७. लम्बी ८. सौन्दर्य की वसन्त-ऋतु ९. अत्याचारों का बन्धन १०. (संघर्ष से) बचने की इच्छा रखने वाले धैर्य की परीक्षा ११. धैर्य और सहन-शक्ति का दावा

हुस्न और मौत

जो फूल सारे गुलिस्तां में सबसे अच्छा हो,
फ़रोग़े-नूर[1] हो जिससे फ़िज़ाए-रंगीं[2] में,
खिज़ां[3] के जोरो-सितम[4] को न जिसने देखा हो,
बहार ने जिसे ख़ूने-जिगर से पाला हो,
वो एक फूल समाता है चश्मे-गुलचीं[5] में।
हज़ार फूलों से आबाद बाग़े-हस्ती[6] है,
अजल[7] की आंख फ़क़त एक को तरसती है।
कई दिलों की उमीदों का जो सहारा हो।
फ़िज़ा-ए-दहर की आलूदगी[8] से बाला[9] हो।
जहाँ में आके अभी जिसने कुछ न देखा हो।
न क़हते ऐशो-मुसर्रत[10], न ग़म की अरज़ानी[11],
किनारे-रहमते-हक़[12] में उसे सुलाती है,
सकूते-शब[13] में फ़रिश्तों की मर्सिया-ख्वानी[14]।
तवाफ़[15] करने को सुबह-ए-बहार आती है,
सबा[16] चढ़ाने को जन्नत के फूल लाती है।

---

१. प्रकाश में बढ़ोतरी २. रंगीन वातावरण ३. पतझड़ ४. अत्याचार और क्रूरता ५. फूल चुनने वाले की दृष्टि में ६. जीवन रूपी उद्यान ७. मृत्यु, यमदूत ८. सृष्टि के वातावरण की लिप्ति ९. ऊपर (निर्लिप्त) १०. ऐश्वर्य एवं सुख की कमी ११. दुःखों की बहुलता १२. ईश्वर की कृपा को प्रदान करती हैं १३. रात्रि की निस्तब्धता १४. शोक-गीत १५. परिक्रमा १६. प्रभात-समीर

मेरे नदीम[1] ···

ख़यालो-शेर[2] की दुनिया में जान थी जिन से,
फ़िज़ाए-फ़िक्रो-अ़मल[3] अ़रग़वान[4] थी जिन से,
वो जिनके नूर[5] से शादाब[6] थे महो-अंजुम[7],
जनूने-इश्क़ की हिम्मत जवान थी जिन से,
वो आरज़ूएं[8] कहां सो गई हैं मेरे नदीम ?
वो नासबूर[9] निगाहें, वो मुन्तज़िर राहें,
वो पासे-ज़ब्त[10] से दिल में दबी हुई आहें,
वो इन्तज़ार की रातें, तवील[11], तीरह-व-तार[12],
वो नीम-ख़्वाब शबिस्तां[13], वो मख़मलीं बांहें,
कहानियां थीं, कहीं खो गई हैं मेरे नदीम !

मचल रहा है रगे-ज़िन्दगी में ख़ूने-बहार,
उलझ रहे हैं पुराने ग़मों से रूह के तार,
चलो, कि चलके चिराग़ां[14] करें दियारे-हबीब[15],
हैं इन्तज़ार में अगली[16] मोहब्बतों के मज़ार[17],
मोहब्बतें जो फ़ना[18] हो गई हैं मेरे नदीम !

---

१. मित्र, साथी २. विचार और काव्य ३. विचार और कर्म का वातावरण ४. लाल (रंगीन) ५. ज्योति ६. आप्लावित, परिपूर्ण ७. चाँद और तारे ८. आकांक्षाएँ ९. बेचैन, अधीर १०. सहन करने का लिहाज ११. लम्बी १२. अन्धकारपूर्ण १३. अर्ध-जाग्रत शयनागार १४. दीप-मालिका १५. प्रिय मित्र के घर १६. पहली, पुरानी १७. प्रेम की समाधियाँ १८. विनष्ट

मर्गे-सोज़े-मोहब्बत[1]

आओ कि मर्गे-सोज़े-मोहब्बत मनाएं हम,
आओ कि हुस्ने-माह[2] से दिल को जलाएं हम।
ख़ुश हो फ़िराक़े-क़ामतो-रुख़सारे-यार[3] से,
सर्वो-गुलो-समन[4] से नज़र को सताएं हम।
वीरानी-ए-हयात को[5] वीरानतर[6] करें,
ले नासह[7] ! आज तेरा कहा मान जाएं हम।
फिर ओट लेके दामने-अब्रे-बहार की[8],
दिल को मनाएं हम कभी आंसू बहाएं हम।
सुलझाएं बेदिली से ये उलझे हुए सवाल,
वां जाएं या न जाएं, न जाएं कि जाएं हम।
फिर दिल को पासे-ज़ब्त[9] की तलक़ीन[10] कर चुकें,
और इम्तहाने-ज़ब्त[11] से फिर जी चुराएं हम।
आओ कि आज ख़त्म हुई दास्ताने-इश्क़[12],
अब ख़त्म-आशिक़ी[13] के फ़साने[14] सुनाएं हम।

---

१. प्रेम की जलन की मृत्यु (अन्त) २. चन्द्रमा के सौन्दर्य ३. प्रेयसी के कपोलों और लम्बे क़द के वियोग से ४. सर्व नामक पेड़ (जिससे ऊँचे क़द की उपमा दी जाती है) तथा फूलों (जिनसे कपोलों की उपमा दी जाती है) ५. जीवन की वीरानी को ६. और अधिक वीरान ७. उपदेशक ८. वसन्त-ऋतु के बादल के पल्ले की ९. सहन करने की परिपाटी १०. उपदेश ११. धैर्य की परीक्षा १२. प्रेम की कहानी १३. वह प्रेम जो समाप्त हो चुका है १४. कहानियाँ

तराना

दरबारे-वतन में जब इक दिन सब जाने वाले जाएंगे,
कुछ अपनी सज़ा को पहुँचेंगे, कुछ अपनी जज़ा[1] ले जाएंगे।

ऐ ख़ाक-नगीनो[2] ! उठ बैठो वो वक़्त क़रीब आ पहुँचा है,
जब तख़्त[3] गिराए जाएंगे, जब ताज उछाले जाएंगे।

अब दूर गिरेंगी ज़ंजीरें, अब ज़िन्दानों की[4] ख़ैर नहीं,
जो दरिया झूम के उट्ठेंगे, तिनकों से न टाले जाएंगे।

कटते भी चलो बढ़ते भी चलो, बाज़ू भी बहुत हैं सर भी बहुत,
चलते भी चलो कि अब डेरे मंज़िल पे ही डाले जाएंगे।

ऐ ज़ुल्म के मारो ! लब खोलो चुप रहने वालो चुप कब तक,
कुछ हश्र[5] तो इन से उट्ठेगा, कुछ दूर तो नाले[6] जाएंगे।

---

१. बदला २. धूल-मिट्टी में रहने वालो ३. राज्य-सिंहासन
४. कारागारों की ५. प्रलय, विनाश ६. आर्तनाद

ग़ज़लें

दोनों जहान तेरी मोहब्बत में हार के ।
वो जा रहा है कोई शबे-ग़म गुज़ार के ।।

वीरां है मैकदा ख़ुमो-साग़र[1] उदास हैं ।
तुम क्या गये कि रूठ गये दिन बहार के ।।

इक फ़ुर्सते-गुनाह[2] मिली, वो भी चार दिन ।
देखे हैं हमने हौसले परवरदिगार के[3] ।।

दुनिया ने तेरी याद से बेगाना कर दिया ।
तुझ से भी दिलफ़रेब[4] हैं ग़म रोज़गार के[5] ।।

भूले से मुस्करा तो दिये थे वो आज 'फ़ैज़' ।
मत पूछ वलवले दिले-नाकर्दाकार के[6] ।।

◇ ◇ ◇

१. शराब का प्याला और मटकी २. पाप करने का अवकाश ३. भगवान के ४. हृदयाकर्षक ५. सांसारिक ग़म ६. अनुभव-हीन दिल के

हम पर तुम्हारी चाह का इल्ज़ाम ही तो है,
दुश्नाम[1] तो नहीं है ये अक्राम[2] ही तो है।

करते हैं जिसपे तअ्न[3] कोई जुर्म तो नहीं,
शौक़े-फ़ज़लो-उल्फ़ते-नाकाम[4] ही तो है।

दिल नाउमीद तो नहीं नाकाम[5] ही तो है,
लम्बी है ग़म की शाम मगर शाम ही तो है।

दस्ते-फ़लक में[6] गर्दिशे-तक़दीर[7] तो नहीं,
दस्ते-फ़लक में गर्दिशे-अय्याम[8] ही तो है।

आखिर तो एक रोज़ करेगी नज़र वफ़ा,
वो यार खुश-खसाल[9] सरे-बाम[10] ही तो है।

भीगी है रात 'फ़ैज़' ग़ज़ल इब्तदा[11] करो,
वक़्ते-सरोद[12] दर्द का हंगाम[13] ही तो है।

---

१. गाली, (बुराई) २. अनुग्रह ३. व्यंग ४. व्यर्थ की चाह तथा असफल प्रेम ५. असफल ६. आकाश (विधाता) के हाथ में ७. भाग्य-चक्र ८. रात-दिन का चक्र ९. अच्छे स्वभाव वाला १०. छत के सिरे पर ११. प्रारम्भ १२. गाने का समय १३. क्षण (अवसर)

तुम आये हो न शबे-इन्तज़ार[1] गुज़री है।
तलाश में है सहर[2], बार-बार गुज़री है॥

जुनूं में[3] जितनी भी गुज़री ब-कार[4] गुज़री है।
अगरचे दिल पे ख़राबी हज़ार गुज़री है॥

हुई है हज़रते-नासह से[5] गुफ़्तगू जिस शब।
वो शब ज़रूर सरे-कूए-यार[6] गुज़री है॥

वो बात सारे फ़साने में[7] जिसका ज़िक्र न था।
वो बात उनको बहुत नागवार गुज़री है॥

न गुल खिले हैं, न उनसे मिले, न मै पी है।
अजीब रंग में अब के बहार गुज़री है॥

चमन पे ग़ारते-गुलचीं से[8] जाने क्या गुज़री।
क़फ़स से[9] आज सबा[10] बेक़रार गुज़री है॥

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. इन्तज़ार की रात २. सुबह ३. उन्माद में ४. काम में ५. उपदेशक से ६. प्रेमिका की गली में ७. कहानी में ८. माली की लूट-खसूट ९. पिंजरे से १०. प्रभात समीर

इश्क़ मिन्नत-कशे-क़रार[1] नहीं ।
हुस्न मजबूरे - इन्तज़ार नहीं ॥

तेरी रंजिश की इन्तहा मालूम ।
हसरतों का मेरा शुमार[2] नहीं ॥

अपनी नज़रें बखेर दे साक़ी ।
मैं बअंदाज़ा - ए - ख़ुमार[3] नहीं ॥

ज़ेरे-लब[4] है अभी तबस्सुमे-दोस्त[5]।
मुन्तशिर[6] जलवा-ए-बहार[7] नहीं ॥

अपनी तकमील[8] कर रहा हूं मैं ।
वर्ना तुझसे तो मुझको प्यार नहीं ॥

चारा-ए - इन्तज़ार[9] कौन करे ।
तेरी नफ़रत भी उस्तवार[10] नहीं ॥

'फ़ैज़' ज़िन्दा रहें वो हैं तो सही ।
क्या हुआ गर वफ़ा-शुआर[11] नहीं ॥

◇ ◇ ◇

---

१. चैन का आभारी २. गणना ३. नशे के अनुमान के अनुसार ४. होंटों में ५. मित्र या प्रेमिका की मुस्कान ६. अस्त-व्यस्त ७. बहार का जलवा ८. पूर्ति ९. इन्तज़ार का इलाज १०. स्थायी ११. वफ़ादार

रंग पैराहन का[1], खुशबू ज़ुल्फ़ लहराने का नाम
मौसमे-गुल[2] है तुम्हारे बाम पर[3] आने का नाम ॥

दोस्तो, उस चश्मो-लब की[4] कुछ कहो जिसके बग़ैर।
गुलिस्तां की बात रंगीं[5] है, न मैख़ाने का नाम ॥

फिर नज़र में फूल महके, दिल में फिर शम्में जलीं।
फिर तसव्वुर ने[6] लिया उस बज़्म में जाने का नाम ॥

दिलबरी ठहरा ज़बाने - ख़ल्क़[7] खुलवाने का नाम।
अब नहीं लेते परी-रू[8] ज़ुल्फ़ बिखराने का नाम ॥

अब किसी लैला को भी इक़रारे - महबूबी[9] नहीं।
इन दिनों बदनाम है हर एक दीवाने का नाम ॥

मोहतसिब की[10] ख़ैर, ऊंचा है उसी के फ़ैज़[11] से।
रिंद का, साक़ी का, मै का, ख़ुम का[12], पैमाने का नाम ॥

हम से कहते हैं चमन वाले, ग़रीबाने - चमन[13]!
तुम कोई अच्छा सा रख लो अपने वीराने का नाम ॥

'फ़ैज़' उनको है तक़ाज़ा - ए - वफ़ा[14] हम से जिन्हें।
आशना के[15] नाम से प्यारा है बेगाने का नाम ॥

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. लिबास का २. वसन्त ऋतु ३. छत पर ४. आँखों और होंटों की ५. रंगीन ६. कल्पना ने ७. दुनिया की ज़बान ८. परियों ऐसे मुखड़े वाले ९. प्रेमिका होने का इक़रार १०. रसाध्यक्ष की ११. कृपा से १२. शराब के मटके का १३. प्रवासी १४. वफ़ा का तक़ाज़ा १५. मित्र के

दिल में अब यूं तेरे भूले हुए ग़म आते हैं।
जैसे बिछड़े हुए काबे में सनम[1] आते हैं॥

एक एक करके हुए जाते हैं तारे रोशन।
मेरी मंज़िल की तरफ़ तेरे क़दम आते हैं॥

रक़्से-मै[2] तेज़ करो, साज़ की लै तेज़ करो।
सूए-मैख़ाना[3] सफ़ीराने - सफ़र[4] आते हैं॥

कुछ हमीं को नहीं अहसान उठाने का दिमाग़।
वो तो जब आते हैं, मायल-ब-करम[5] आते हैं॥

और कुछ देर न गुज़रे शबे-फ़ुर्क़त[6] से कहो।
दिल भी कम दुखता है वो याद भी कम आते हैं॥

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. मूर्तियाँ २. शराब का नृत्य (दौर) ३. मधुशाला की ओर ४. मुसाफ़िर ५. कृपा करने पर उतारू ६. वियोग की रात

अज्ज़े-अहले-सितम की[1] बात करो ।
इश्क़ के दम-क़दम की बात करो ।।

बज़्मे-अहले-तरब को[2] शर्माओ ।
बज़्मे-असहाबे-ग़म की[3] बात करो ।।

बामे-सरवत के[4] ख़ुशनसीबों से ।
अज़्मते-चश्मे-नम की[5] बात करो ।।

है वही बात यूं भी और यूं भी ।
तुम सितम या करम की[6] बात करो ।।

ख़ैर हैं अहले - दैर[7] जैसे हैं ।
आप अहले-हरम[8] की बात करो ।।

हिज्र की शब तो कट ही जायेगी ।
रोज़े-वस्ले-सनम की[9] बात करो ।।

जान जाएंगे जानने वाले ।
'फ़ैज़' फ़रहादो-जम की[10] बात करो ।।

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. अत्याचारियों की गिड़गिड़ाहट २. प्रमोद मनाने वालों की सभा को ३. ग़म जिनकी निधि है उनकी सभा को ४. समृद्धि के शिखर पर के ५. सजल नेत्रों की महानता की ६. कृपा की ७. मन्दिर वाले ८. काबे (की चारदीवारी) वालों की ९. प्रेमिका के मिलन के दिन की १०. फ़रहाद और जमशेद (ईरान का एक प्रसिद्ध बादशाह) की

कभी-कभी याद में उभरते हैं नक़्शे-माज़ी[1] मिटे-मिटे से।
वो आज़माइश दिलो-नज़र की, वो क़ुरबतें सी[2] वो फ़ासले से॥

कभी-कभी आरज़ू के सहरा में[3] आके रुकते हैं क़ाफ़िले से।
वो सारी बातें लगाव की-सी, वो सारे उन्वां[4] विसाल के[5] से॥

निगाहो-दिल को क़रार कैसा, निशातो-ग़म में[6] कमी कहां की।
वो जब मिले हैं तो उन से हर बार की है उल्फ़त नये सिरे से॥

तुम्हीं कहो रिंदो-मोहतसिब[7] में है आज शब कौन फ़र्क़ ऐसा।
ये आके बैठे हैं मैकदे में वो उठके आये हैं मैकदे से॥

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. अतीत के चित्र २. नज़दीकियां सी ३. मरुस्थल में ४. शीर्षक
५. मिलन के ६. सुख-दुःख में ७. पियक्कड़ और रसाध्यक्ष में

कई बार उसका दामन भर दिया हुस्ने-दो-आ़लम से[१] ।
मगर दिल है कि उसकी ख़ाना-वीरानी नहीं जाती ।।

कई बार उसकी ख़ातिर ज़र्रे-ज़र्रे का जिगर चीरा ।
मगर ये चश्मे-हैरां[२] जिसकी हैरानी नहीं जाती ।।

नहीं जाती मता-ए-लालो-गौहर[३] की गिरांयाबी[४] ।
मता-ए-ग़ैरतो-ईमां को[५] अरज़ानी[६] नहीं जाती ।।

मेरी चश्मे-तन-आसां को[७] बसीरत[८] मिल गई जब से ।
बहुत जानी हुई सूरत भी पहचानी नहीं जाती ।।

बजुज़[९] दीवानगी वां और चारा ही कहो क्या है ?
जहां अक़्लो-ख़िरद की[१०] एक भी मानी नहीं जाती ।।

◇ ◇

१. दोनों दुनियाओं की सुन्दरता से २. हैरान आँख ३. हीरे मोतियों की निधि ४. महंगापन ५. ईमान और गैरत की निधि ६. सस्तापन ७. आलसी आँख को ८. विश्वास और पहचान की शक्ति ९. सिवाय १०. बुद्धि की

शैख़ साहब से रस्मो-राह न की ।
शुक्र है ज़िन्दगी तबाह न की ।।

तुझ को देखा तो सेर-चश्म हुए[1] ।
तुझ को चाहा तो और चाह न की ।।

तेरे दस्ते-सितम का[2] अज्ज़[3] नहीं ।
दिल ही काफ़िर था जिसने आह न की ।।

थे शबे-हिज्र[4] काम और बहुत ।
हमने फ़िक्रे-दिले-तबाह न की ।।

कौन क़ातिल बचा है शहर में 'फ़ैज़' ।
जिससे यारों ने रस्मो-राह न की !

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. आंखों की सारी भूख मिट गई २. अत्याचारी हाथ का ३. नम्रता या कमी ४. वियोग की रात को

शामे-फ़िराक़[1] अब न पूछ, आई और आके टल गई।
दिल था कि फिर बहल गया, जां थी कि फिर संभल गई॥

बज़्मे-ख़याल में[2] तेरे हुस्न की शम्मअ़ जल गई।
दर्द का चांद बुझ गया, हिज्र की रात ढल गई॥

जब तुझे याद कर लिया, सुबह महक-महक उठी।
जब तेरा ग़म जगा लिया, रात मचल-मचल गई॥

दिल से तो हर मुआ़मला करके चले थे साफ़ हम।
कहने में उनके सामने बात बदल-बदल गई॥

आख़िरे-शब के[3] हम-सफ़र 'फ़ैज़' न जाने क्या हुए?
रह गई किस जगह सबा[4], सुबह किधर निकल गई?

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. वियोग की शाम २. कल्पनाओं की सभा में ३. रात के अन्त के ४. प्रभात-समीर

सच है हमीं को आपके शिकवे बजा न थे।
बेशक सितम[1] जनाब के सब दोस्ताना थे॥

हां, जो जफ़ा भी आपने की क़ायदे से की।
हां, हम ही कारबंदे-उसूले-वफ़ा[2] न थे॥

आये तो यूं कि जैसे हमेशा थे मेहरबां।
भूले तो यूं कि गोया कभी आशना[3] न थे॥

क्यों दादे-ग़म हमीं ने तलब की, बुरा किया।
हम से जहां में कुश्ता-ए-ग़म[4] और क्या न थे॥

हर चारागर को[5] चारागरी से गुरेज़[6] था।
वर्ना हमें जो दुख थे बहुत लादवा[7] न थे॥

लब पर है तल्ख़ी-ए-मै-ए-अय्याम[8], वर्ना 'फ़ैज़'
हम तल्ख़ी-ए-कलाम[9] पे मायल[10] ज़रा न थे॥

(जेल में)

◇ ◇

---

१. अत्याचार २. वफ़ा निभाने के नियमों पर चलने वाले ३. परिचित ४. ग़म के मारे हुए ५. उपचारक ६. विरक्ति ७. असाध्य ८. दिनों (जीवन) की शराब की कड़वाहट ९. कटु वचन १०. प्रवृत्त

हर हक़ीक़त[१] मजाज़[२] हो जाये ।
काफ़िरों की नमाज़ हो जाये ।।

मिन्नते-चारासाज़[३] कौन करे ?
दर्द जब जां-नवाज़[४] हो जाये ।।

इश्क़ दिल में रहे तो रुसवा हो ।
लब पे आये तो राज़ हो जाये ।।

लुत्फ़ का इन्तज़ार करता हूँ ।
जोर[५] ता-हद्दे-नाज़[६] हो जाये ।।

उम्र बेसूद[७] कट रही है 'फ़ैज़' ।
काश ! अफ़शा-ए-राज़ हो जाये[८] ।।

◇ ◇ ◇

१. वास्तविकता २. अधिकृत ३. उपचारक की खुशामद ४. जीवनवर्द्धक ५. अत्याचार ६. नाज़ की हद तक ७. व्यर्थ ८. भेद खुल जाये

अब वही हर्फ़े-जुनूं[१] सब की ज़बां ठहरी है।
जो भी चल निकली है, वो बात कहां ठहरी है॥

आज तक शैख़ के अकराम में[२] जो शै थी हराम।
अब वही दुश्मने-दीं[३] राहते-जां[४] ठहरी है॥

है ख़बर गर्म कि फिरता है गुरेज़ां[५] नासेह[६]।
गुफ़्तगू आज सरे-कूए-बुतां[७] ठहरी है॥

वस्ल की शब थी तो किस दर्जा सुबक[८] गुज़री थी।
हिज्र की शब है तो क्या सख़्त गिरां[९] ठहरी है॥

इक दफ़ा बिखरी तो हाथ आई है कब मौजे-शमीम[१०]।
दिल से निकली है तो क्या लब पे फ़ुग़ां[११] ठहरी है॥

दस्ते-सय्याद[१२] भी आजिज़[१३] है, कफ़े-गुलचीं[१४] भी।
बूए-गुल[१५] ठहरी, न बुलबुल की ज़बां ठहरी है॥

आते आते युंही दम भर को रुकी होगी बहार।
जाते जाते युंही पल भर को ख़िज़ां ठहरी है॥

हमने जो तर्ज़े-फ़ुग़ां[१६] की है क़फ़स में[१७] ईजाद।
'फ़ैज़' गुलशन में वही तर्ज़े-बयां[१८] ठहरी है॥

(जेल में)

---

१. उन्माद की बात (भाषा) २. पारितोषिक ३. धर्म की शत्रु ४. जीवन का आनन्द ५. विरक्त ६. उपदेशक ७. प्रेमिका की गली में ८. हल्की, शीघ्र ९. भारी, असह्य १०. सुगंधि की लहर ११. आह १२. शिकारी का हाथ १३. असमर्थ १४. माली का पंजा १५. फूल की सुगंध १६. आर्त्तनाद का ढंग १७. पिंजरे में १८. बात का ढंग

राज़े - उल्फ़त छुपा के देख लिया।
दिल बहुत कुछ जला के देख लिया॥
और क्या देखने को बाक़ी है।
आप से दिल लगा के देख लिया॥
आस उस दर से टूटती ही नहीं।
जाके देखा, न जाके देख लिया॥
वो मेरे होके भी मेरे न हुए।
उनको अपना बना के देख लिया॥
आज उनकी नज़र में कुछ हमने।
सब की नज़रें बचा के देख लिया॥
'फ़ैज़' तकमीले-ग़म[1] भी हो न सकी।
इश्क़ को आज़मा के देख लिया॥

◇ ◇ ◇

१. ग़म की पूर्ति

तुम्हारी याद के जब ज़ख़्म भरने लगते हैं।
किसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं॥

हदीसे-यार के[1] उन्वां[2] निखरने लगते हैं।
तो हर हरीम में[3] गेसू[4] संवरने लगते हैं॥

हर अजनबी हमें महरम[5] दिखाई देता है।
जो अब भी तेरी गली से गुज़रने लगते हैं॥

सबा से[6] करते हैं ग़ुरबत-नसीब[7] ज़िक्रे-वतन[8]।
तो चश्मे-सुबह में[9] आंसू उभरने लगते हैं॥

वो जब भी करते हैं इस नुत्क़ो-लब की[10] बख़ियागरी।
फ़ज़ा में[11] और भी कांटे बिखरने लगते हैं॥

दरे-क़फ़स पे[12] अंधेरे की मुहर लगती है।
तो 'फ़ैज़' दिल में सितारे उतरने लगते हैं॥

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. यार की चर्चा के २. शीर्षक ३. घर की चारदीवारी में ४. केश ५. राज़दार ६. प्रभात समीर ७. देश से निकले हुए ८. देश की चर्चा ९. सुबह की आंख में १०. मुंह और होंटों की ११. वातावरण में १२. पिंजरे के दरवाजे पर

यहां वाबस्तगी[1], वां[2] बरहमी[3], क्या जानिये क्यों है ?
न हम अपनी नज़र समझे, न हम उनकी अदा समझे ॥

फ़रेबे - आरज़ू की[4] सहल - अंगारी[5] नहीं जाती ।
हम अपने दिल की धड़कन को तेरी आवाज़े-पा[6] समझे ॥

तुम्हारी हर नज़र से मुन्सलक[7] है रिश्ता-ए-हस्ती[8] ।
मगर ये दूर की बातें कोई नादान क्या समझे ?

न पूछो अहदे-उल्फ़त की[9] , बस इक ख़्वाबे-परेशां[10] था
न दिल को राह पर लाये न दिल का मुद्आ[11] समझे ॥

◇ ◇ ◇

१. सम्बंध २. वहां ३. क्षोभ ४. आकांक्षा के धोखे की ५. आसान-पसंदी ६. पैरों की चाप ७. सम्बद्ध ८. जीवन का सम्बंध ९. प्रेम के काल की १०. परेशान स्वप्न ११. अभिप्राय

गुलों में रंग भरे बादे-नौबहार[1] चले।
चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले॥

क़फ़स[2] उदास है यारो सबा से[3] कुछ तो कहो।
कहीं तो बहरे-ख़ुदा[4] आज ज़िक्रे-यार चले॥

बड़ा है दर्द का रिश्ता, ये दिल ग़रीब सही।
तुम्हारे नाम पे आएंगे ग़मगुसार[5] चले॥

जो हम पे गुज़री सो गुज़री मगर शबे-हिज्रां।
हमारे अश्क तेरी आक़बत[6] संवार चले॥

हुज़ूरे-यार[7] हुई दफ़्तरे-जुनूं[8] की तलब।
गिरह में लेके गिरेबां का तार-तार चले॥

मुक़ाम 'फ़ैज़' कोई राह में जंचा ही नहीं।
जो कूए-यार से[10] निकले तो सूए-दार[11] चले॥

(जेल में)

◇ ◇ ◇

---

५. नव-वसन्त की हवा २. पिंजरा ३. प्रभात-समीर ४. भगवान के लिए ५. सहानुभूति-कर्ता ६. वियोग की रात को ७. परलोक ८. यार की सेवा में ९. इश्क़ (उन्माद) के वृत्तांत १०. यार की गली से ११. फांसी के तख़ते की ओर

हिम्मते-इल्तिजा[1] नहीं बाक़ी।
ज़ब्त का हौसला नहीं बाक़ी॥
इक तेरी दीद[2] छिन गई मुझ से।
वर्ना दुनिया में क्या नहीं बाक़ी?
अपनी मश्क़े-सितम से[3] हाथ न खेंच।
मैं नहीं या वफ़ा नहीं बाक़ी॥
तेरी चश्मे-अलम-नवाज़[4] की ख़ैर।
दिल में कोई गिला नहीं बाक़ी॥
हो चुका ख़त्म अहदे-हिज्रो-विसाल[5]
ज़िन्दगी में मज़ा नहीं बाक़ी॥

◇ ◇ ◇

१. प्रार्थना की शक्ति २. दर्शन ३. अत्याचार के अभ्यास से ४. वेदना प्रदान करने वाली आंख ५. वियोग तथा मिलन का ज़माना

कब याद में तेरा साथ नहीं, कब हाथ में तेरा हाथ नहीं।
सद[1] शुक्र कि अपनी रातों में अब हिज्र की कोई रात नहीं॥

मुश्किल हैं अगर हालात वहां, दिल बेच आयें जां दे आयें।
दिल वालो कूचा-ए-जानां में[2] क्या ऐसे भी हालात नहीं॥

जिस धज से कोई मक़तल में[3] गया, वो शान सलामत रहती है।
ये जान तो आनी-जानी है, इस जां की तो कोई बात नहीं॥

मैदाने-वफ़ा[4] दरबार नहीं, यां नामो-नसब की[5] पूछ कहां?
आशिक़ तो किसी का नाम नहीं, कुछ इश्क़ किसी की ज़ात नहीं॥

गर बाज़ी इश्क़ की बाज़ी है, जो चाहो लगा दो डर कैसा?
गर जीत गये तो क्या कहना, हारे भी तो बाज़ी मात नहीं॥

(जेल में)

◇ ◇ ◇

१. सौ २. प्रेमिका की गली में ३. वधस्थल ४. वफ़ा का क्षेत्र ५. नाम तथा कुल की

चश्मे-मैगूं[1] ज़रा इधर कर दे,
दस्ते-क़ुद्रत को[2] बेअसर[3] कर दे।

तेज़ है आज दर्दे-दिल साक़ी,
तल्खी-ए-मै[4] को तेज़तर[5] कर दे।

जोशे-वहशत[6] है तिश्ना-काम[7] अभी,
चाक दामन को ताजगर[8] कर दे।

मेरी क़िस्मत से खेलने वाले,
मुझको क़िस्मत से बेखबर कर दे।

लुट रही है मेरी मताअ़-ए-नियाज़[9],
काश! वो इस तरफ़ नज़र करदे।

'फ़ैज़' तकमीले-आरज़ू[10] मालूम ?
हो सके तो युंही बसर कर दे।

---

१. शराब के रंग जैसे रंग वाली आँख २. प्रकृति के हाथ को ३. निष्प्रभाव ४. शराब की कड़वाहट ५. और अधिक तेज़ ६. उन्माद का जोश ७. अतृप्त ८. सफल-मनोरथ ९. भक्ति-रूपी पूंजी १०. अभिलाषा पूर्ण होने का परिणाम

रह-ए-ख़िज़ां[1] में तलाशे-बहार करते रहे,
शबे-सियह[2] से तलबे-हुस्ने-यार[3] करते रहे।

ख़याले-यार कभी ज़िक्रे-यार करते रहे,
इसी मताअ[4] पे हम रोज़गार करते रहे।

नहीं शिकायते - हिज्रां[5] कि इस वसीले से[6],
हम उनसे रिश्ता-ए-दिल उस्तवार[7] करते रहे।

वो दिन कि कोई भी जब वजह-ए-इन्तज़ार न थी,
हम उनमें तेरा सिवा[8] इन्तज़ार करते रहे।

हम अपने राज़ पे नाज़ां थे, शर्मसार न थे,
हर-एक से सुख़ने-राज़दार[9] करते रहे।

उन्हीं के फ़ैज़[10] से बाज़ारे-अक़्ल रौशन है,
जो गाह-गाह[11] जनूं[12] अख़्तियार करते रहे।

---

१. पतझड़ के मार्ग में २. काली, अंधियारी रात ३. यार का सौन्दर्य माँगते रहे ४. सरमाया ५. वियोग की मुझे शिकायत नहीं है ६. साधन से ७. दृढ़ ८. और अधिक ९. गुप्त भेद बतलाते रहे १०. कृपा ११. कभी-कभी १२. पागलपन

[*नज़रे-ग़ालिब*][1]

किसी गुमां[2] पे तवक़्क़ुअ[3] ज़ियादा रखते हैं,
फिर आज कू-ए-बुतां का[4] इरादा रखते हैं।

बहार आएगी जब आएगी, ये शर्त नहीं,
कि तिश्ना-काम[5] रहें गर्चे बादा[6] रखते हैं।

तेरी नज़र का गिला क्या ? जो है गिला दिल को
तो हम से है कि तमन्ना[7] ज़ियादा रखते हैं।

ग़मे-जहां[8] हो, ग़मे-यार हो[9] , कि तीरे-सितम[10],
जो आए-आए, कि हम दिल कुशादा[11] रखते हैं।

जवाब वाइज़े-चाबुक-ज़बां[12] में 'फ़ैज़' हमें,
यही बहुत हैं जो दो हर्फ़े-सादा रखते हैं।

◇ ◇ ◇

१. यह ग़ज़ल महाकवि 'ग़ालिब' की एक ग़ज़ल के ढंग पर कही गई है, इसलिए 'फ़ैज़' ने इसे ग़ालिब को 'भेंट' किया है। २. भ्रम ३. प्रत्याशा ४. प्रेयसी की गली में जाने का ५. तृषित ६. शराब ७ अभिलाषा ८. सांसारिक चिन्ताएं ९. प्रेयसी-सम्बन्धी चिन्ता १०. अत्याचार का तीर ११. खुला हुआ, विशाल १२. तेज़ (तीखा) बोलने वाला उपदेशक

[नज़रे-सौदा][1]

फ़िक्रे-दिलदारिये-गुलज़ार[2] करूं या न करूं ?
ज़िक्रे-मुर्ग़ाने-गिरफ़्तार[3] करूं या न करूं ?
क़िस्सा-ए-साज़िशे-अग़ियार[4] कहूँ या न कहूं ?
शिकवा-ए-यारे तरहदार[5] करूं या न करूं ?
जाने क्या वज़्अ़[6] है अब रस्मे-वफ़ा[7] की ऐ दिल !
वज़्अ़-ए-देरीना पे[8] इसरार[9] करूं या न करूं ?
यूं बहार आई है इमसाल[10] कि गुलशन में सबा[11],
पूछती है गुज़र[12] इस बार करूं या न करूं ?
गोया[13] इस सोच में है दिल में लहू भरके गुलाब,
दामनो-जेब को गुलनार[14] करूं या न करूं ?
है फ़क़त मुर्ग़े-ग़ज़ल-ख़्वां[15] कि जिसे फ़िक्र नहीं,
मौअ़्नत-दिल[16] गर्मी-ए-गुफ़्तार[17] करूं या न करूं ।

◇ ◇ ◇

---

१. यह ग़ज़ल उर्दू के विख्यात प्राचीन कवि 'सौदा' की एक ग़ज़ल के ढंग पर लिखी गई है, इसलिए 'फ़ैज़' ने इसे 'सौदा' को भेंट किया है । २. देश-रूपी उद्यान की देख-भाल की चिन्ता ३. बन्दी पक्षियों की चर्चा ४. शत्रुओं के षड्यन्त्र की कहानी ५. रंगीले यार की शिकायत ६. रीति ७. प्रेम निभाने की परिपाटी ८. प्राचीन प्रणाली ९. हठ १०. इस साल ११. प्रात-समीर १२. प्रवेश १३. मानो १४. पुष्पित, रंगीन १५. गाने वाला पक्षी १६. हल्की, नरम, सह्य १७. बात की गर्मी को

कुछ चुने हुए शेर

अदा-ए-हुस्न की[१] मासूमियत को कम कर दे,
गुनाहगार नज़र को हिजाब[२] आता है।

◇ ◇ ◇

वक़्फ़े-हिर्मानो-यास[३] रहता है,
दिल है अक्सर उदास रहता है।
तुम तो ग़म देके भूल जाते हो,
मुझ को अहसां का पास[४] रहता है॥

◇ ◇ ◇

न जाने किस लिए उम्मीदवार बैठा हूँ।
इक ऐसी राह पे जो तेरी रहगुज़र[५] भी नहीं॥

◇ ◇ ◇

१. सुन्दरता की अदा को २. लज्जा ३. निराशाओं के समर्पण
४. लिहाज़ ५. गुज़रने का मार्ग

सारी दुनिया से दूर हो जाये,
जो ज़रा तेरे पास हो बैठे।
न गई तेरी बेरुख़ी न गई,
हम तेरी आरज़ू भी खो बैठे।

◇ ◇ ◇

दिल रहीने - ग़मे - जहाँ[1] है आज,
हर नफ़स[2] तिश्ना-ए-फ़ुग़ां[3] है आज।
सख़्त वीरां है महफ़िले - हस्ती[4],
ऐ ग़मे-दोस्त[5] ! तू कहां है आज ?

◇ ◇ ◇

न पूछ जब से तेरा इन्तज़ार कितना है ?
कि जिन दिनों से मुझे तेरा इन्तज़ार नहीं।
तेरा ही अक्स है उन अजनबी बहारों में,
जो तेरे लब, तेरे बाज़ू, तेरा किनार[6] नहीं।

◇ ◇ ◇

---

१. सांसारिक ग़मों के यहाँ गिरवी २. श्वास ३. आह का तृषित
४. जीवन-सभा ५. मित्र (प्रेमिका) का ग़म ६. गोद

तेरा जमाल[1] निगाहों में लेके उट्ठा हूँ,
निखर गई है फ़िज़ा[2] तेरे पैरहन की सी[3]।
नसीम[4] तेरे शबिस्तां से[5] होके आई है,
मेरी सहर में[6] महक है तेरे बदन की सी।

◇ ◇ ◇

कर रहा था ग़मे-जहाँ का[7] हिसाब,
आज तुम याद बेहिसाब आये।
न गई तेरे ग़म की सरदारी,
दिल में यूं रोज़ इंक़िलाब आये।

◇ ◇ ◇

फ़िक्रे - सूदो - ज़ियां[8] तो छूटेगी,
मिन्नते - ईनो - आं[9] तो छूटेगी।
खैर, दोज़ख में मै मिले न मिले,
शैख साहब से जां तो छूटेगी।

◇ ◇ ◇

१. सौंदर्य २. वातावरण ३. लिबास की सी ४. मृदु समीर ५. शयनागार ६. सुबह में ७. सांसारिक ग़मों का ८. लाभ और हानि की चिन्ता ९. इस-उसकी खुशामद

शैख़ से बेहिरास[1] रहते हैं,
हमने तौबा अभी नहीं की है।
ज़िक्रे-दोज़ख़[2], बयाने-हूरो-क़ुसूर[3],
बात गोया यहीं कहीं की है।

◇ ◇ ◇

जगह जगह पे थे नासेह तो क़ूबक़ू[4] दिलबर।
इन्हें पसंद, उन्हें नापसंद क्या करते?

◇ ◇ ◇

मौत अपनी, न अमल अपना, न जीना अपना,
खो गया शोरिशे-गेती में[5] क़रीना[6] अपना।
नाख़ुदा[7] दूर, हवा तेज़, क़रीं[8] कामे-नहंग[9],
वक़्त है फेंक दे लहरों में सफ़ीना[9] अपना।

◇ ◇ ◇

---

१. निडर २. दोज़ख की चर्चा ३. हूरों और महलों की चर्चा ४. गली-गली में ५. संसार के हंगामों में ६. सलीक़ा ७. मांझी ७. निकट ८. मगर का मुंह ९. नाव

शम्मे-नज़र[१], ख़याल के अंजुम[२], जिगर के दाग़,
जितने चिराग़ हैं तेरी महफ़िल से आये हैं।
उठ कर तो आ गये हैं तेरी बज़्म से मगर,
कुछ दिल ही जानता है कि किस दिल से आये हैं।

◇ ◇ ◇

न आज लुत्फ़[३] कर इतना कि कल गुज़र न सके,
वो रात जो कि तेरे गेसुओं की[४] रात नहीं।
ये आरज़ू भी बड़ी चीज़ है मगर हरदम,
विसाले-यार[५] फ़क़त आरज़ू की बात नहीं।

◇ ◇ ◇

बात बस से निकल चली है,
दिल की हालत संभल चली है।
अब जुनूं[६] हद से बढ़ चला है,
अब तबीयत बहल चली है।

◇ ◇ ◇

१. नज़र की शम्मअ़ २. सितारे ३. कृपा, प्रेम ४. केशों की
५. प्रेमिका का मिलन ६. उन्माद

सीखी यहीं मेरे दिले-काफ़िर ने बन्दगी।
रब्बे-करीम[1] है तो तेरी रहगुज़र में है॥
माज़ी में जो मज़ा मेरी शामो-सहर में था।
अब वो फ़क़त तसव्वुरे-शामो-सहर में[2] है॥
क्या जाने किसको किससे है अब दाद की तलब।
वो ग़म जो मेरे दिल में है तेरी नज़र में है॥

◇ ◇ ◇

फिर हरीफ़े-बहार[3] हो बैठे।
जाने किस किसको आज रो बैठे॥
थी, मगर इतनी रायगाँ[4] न थी।
आज कुछ ज़िन्दगी से खो बैठे॥
सारी दुनिया से दूर हो जाये।
जो ज़रा तेरे पास हो बैठे॥

◇ ◇ ◇

रात यूं दिल में तेरी खोई हुई याद आई,
जैसे वीराने में चुपके-से बहार आ जाये।
जैसे सहराओं में[5] हौले से चले बादे-नसीम[6],
जैसे बीमार को बेवजह क़रार आजाये।

◇ ◇ ◇

---

१. कृपालु भगवान २. शाम और सुबह की कल्पना में ३. वसंत के शत्रु ४. व्यर्थ ५. मरुस्थलों में ६. मृदु समीर

मताअ़-ए-लौहो-क़लम[1] छिन गई तो क्या ग़म है ?
कि ख़ूने-दिल[2] में डबो ली हैं उंगलियां मैंने ।
ज़ुबां पे मोहर लगी है तो क्या, कि रख दी है,
हर एक हल्क़ा-ए-ज़ंजीर[3] में ज़ुबां मैंने ॥

◇ ◇ ◇

सुबह फूटी तो आस्मां पे तेरे,
रंगे-रुख़्सार की[4] फुहार गिरी ।
रात छाई तो रू-ए-आ़लम[5] पर,
तेरी ज़ुल्फ़ों की आ़बशार[6] गिरी ।

---

१. क़लम और तख़्ती की पूंजी २. हृदय-रक्त ३. ज़ंजीर की प्रत्येक कड़ी में ४. कपोलों के रंग की ५. जगत के मुख पर ६. निर्झर